चकमक

नवम्बर, 1998 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 7.00

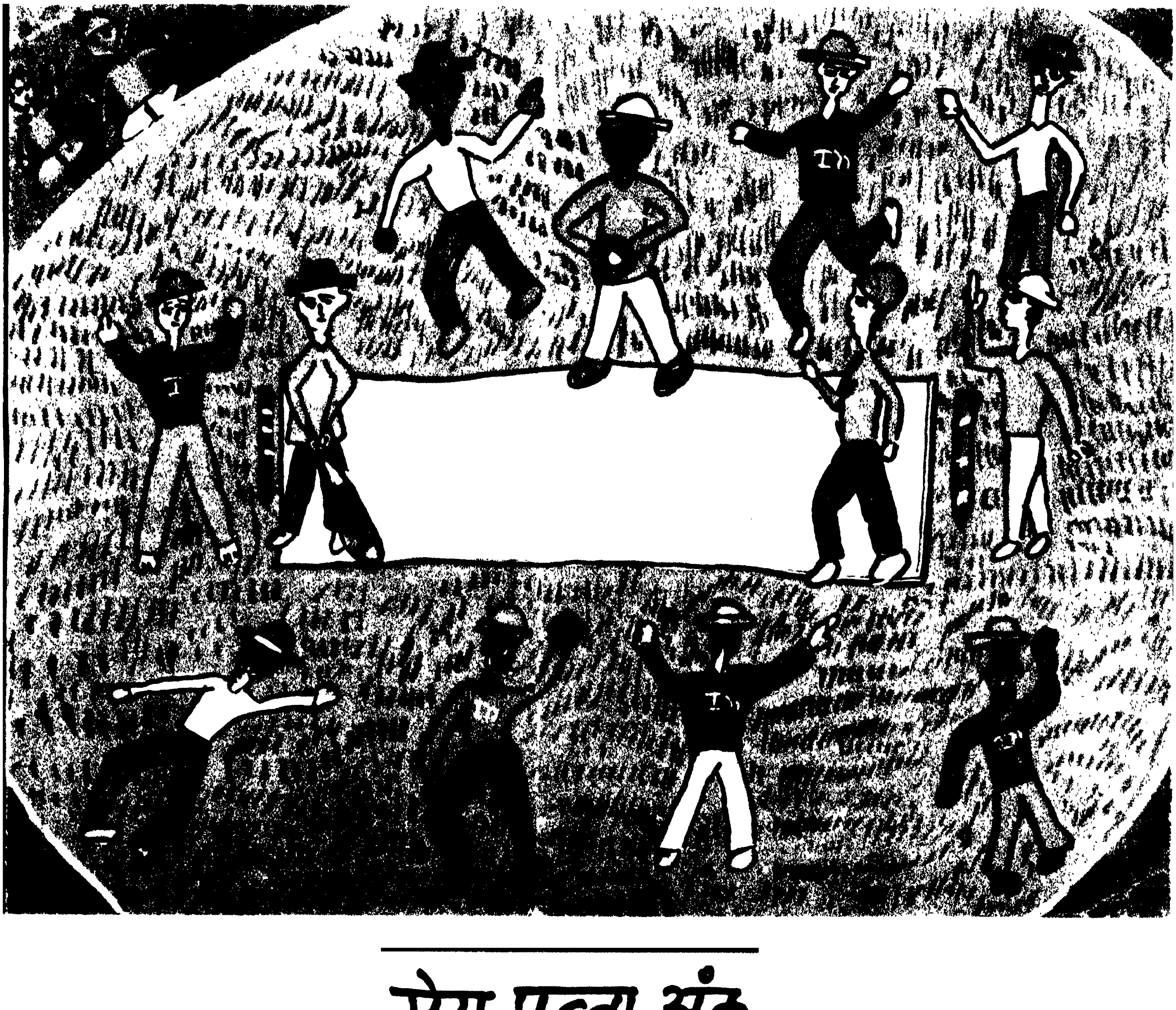

मेरा पन्ना अंक

मालती चंदेरिया, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

बलराम पाटीदार, नौवीं, नालीखेड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-14 अंक-5, नवम्बर 1998

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल बिस्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

परामर्श
सुशील

वितरण
कमल सिंह, मनोज निगम,
अशोक सोकड़े

चकमक का चंदा

एक प्रति : सात रुपए
40.00 रुपए
वार्षिक 75.00 रुपए
दो साल 140.00 रुपए
तीन साल 200.00 रुपए
750.00 रुपए
साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ्त सदस्यता।
आजीवन : 1000.00 रुपए
साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।
सभी में डाक खर्च हमारा
चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक 15.00 रुपए अतिरिक्त

कवर का कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

159 वें अंक में ....

विशेष : मेरा पन्ना में

इनकी कविताएँ हैं :
पारूल बत्रा, गिरिराज सिंह [illegible]र, रितेश सिंह, स्वाति चौधरी तथा शेख साजिद कुरैशी।

इनकी कहानियाँ/ लेख हैं :
सुरेन्द्र कुमार प्रजापति, मुकेश कुमार वर्मा, महेश पांचाल, दिवाकर पटैरिया, भार्गव भाई सोनेजी, तसलीम बी, निरंजन कुमार, आशुतोष, जगदीश प्रसाद साहू, गीत नौटियाल, मेहुल पटोदिया, आशुतोष दुबे तथा रत्नेश सोरठिया।

इनके चित्र हैं :
अनीता बैरासी, एजाज खान, सावन कैलाश कुशवाह, गौरव व्यास, सम्पूर्णा विश्वास, संदीप बैरागी, नवीन होता, केया वासवानी, राकेश गुप्ता, भागीरथ सारस्वा, कल्याणी पासवान, विश्वेन सोनेजी, सुरेन्द्र चौधरी, उज्जवल तिवारी, पंकज पायक, माया, श्रुतिप्रिया, हरीश पाटिल, सुखविन्दर स्वाति, आशुतोष, स्वाति चौधरी, अजय विश्व, दीप्ति, वीरेन्द्र सिंह, श्रीजा, अनुज चौहान, ज्योति केन, शिवाकांत, आशुतोष दुबे, ममता वासनिक, मालती चंदेरिया, सुरेश कुमार राय, धर्मेन्द्र एम. चौहान, रवि तथा बलराम पाटीदार।

धारावाहिक श्रृंखला

20 ❑ हमारी आवाज : 3
30 ❑ हमारे शिक्षक : 3

चित्रकथा

23 ❑ नाव की सवारी

हर बार की तरह

2 ❑ इस बार की बात
14 ❑ खेल कागज़ का : लालटेन
34 ❑ माथा-पच्ची

और यह भी

5 ❑ पाठक लिखते हैं
10 ❑ क्या इनको बीज मानोगे?
28 ❑ तुम भी बनाओ

आवरण : धर्मेन्द्र एम. चौहान, दसवीं, भावनगर, गुजरात

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात.....

पिछले कुछ सालों से तुम्हारी रचनाओं का कम से कम एक अंक यानी मेरा पन्ना अंक हर साल अवश्य प्रकाशित होता रहा है। उसी कड़ी में यह अंक तुम्हारे सामने है। तुम्हारी अपनी रचनाओं के अलावा इस अंक में कुछ नियमित कॉलम और कुछ अन्य रोचक सामग्री भी है। तो पढ़ो और बताओ कि अंक कैसा लगा?

पिछले कुछ समय से हमारे पाठक लगातार पूछते आ रहे हैं कि चकमक उन्हें देर से क्यों मिलती है? या फिर देर से ही भेजी जाती है?

वास्तव में अभी चकमक जिस महीने की होती है, उसी माह की 16 या 17 तारीख़ को डाक में डाली जाती है। इससे पाठकों तक वह तीसरे-चौथे हफ़्ते में पहुँचती है। चकमक पाठकों को महीने के पहले सप्ताह में हर हाल में मिल जाए, ऐसी व्यवस्था करने के लिए हमने एक फैसला किया है।

फैसला यह है कि यह अंक 1998 का आख़िरी अंक होगा। हालांकि यह फैसला करते हुए चकमक टीम को ख़ुशी बिल्कुल भी नहीं हो रही है। चकमक का अगला अंक जनवरी, 1999 का होगा। यानी दिसम्बर, 98 का कोई अंक नहीं होगा। जनवरी का अंक दिसम्बर की 16 या 17 तारीख़ को डाक में डाला जाएगा। इससे पाठकों को वह दिसम्बर के आख़िरी हफ़्ते में या जनवरी के शुरू में हर हाल में मिल जाएगा। और फिर यह क्रम आगे जारी रहेगा। यानी फ़रवरी का अंक जनवरी के अंत में या फ़रवरी के शुरू में पाठकों तक पहुँचेगा।

इस से एक फ़ायदा यह भी होगा कि अब हम सम-सामयिक सामग्री अधिक से अधिक दे सकेंगे।

चकमक के वार्षिक सदस्यों को इससे कोई नुकसान नहीं होगा। उनकी वार्षिक सदस्यता एक महीने और आगे बढ़ जाएगी। जैसे जिनकी सदस्यता दिसम्बर, 98 तक थी वह अब जनवरी, 99 तक की हो जाएगी।

आशा है हमारे पाठक इस फैसले में हमारे साथ हैं।

नए साल की शुभकामनाएँ!

● चकमक

अनीता चौरासी, छिंदगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.

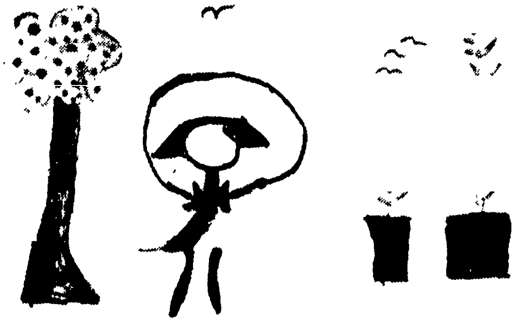

एजाज खान, चौथी, बदनावर, धार, म. प्र.

सावन कैलाश कुशवाहा, छठवीं, बनगाँव, खरगोन, म. प्र.

जून से 98

चकमक
सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

जिला ....

पिन

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह	:	40.00 रुपए
एक साल	:	75.00 रुपए
दो साल	:	140.00 रुपए
तीन साल	:	200.00 रुपए
आजीवन	:	750.00 रुपए *
आजीवन	:	1000.00 रुपए ०

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

० इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

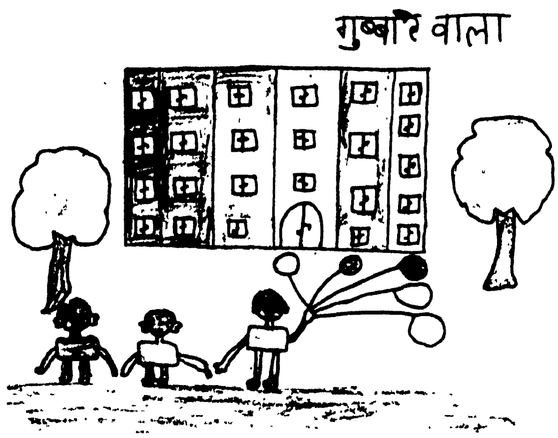

गौरव व्यास, तीसरी, उदयपुर, (राज.)

सम्पूर्णा विस्वास, पाँच साल, नई दिल्ली

संदीप बैरागी, पाँचवी, सतवास, देवास, म. प्र.

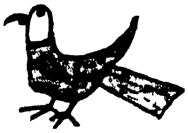

नवीन होता, पाँचवीं, चौरंगा, रायगढ़, म.प्र.

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

....

....

केया वासवानी, रायपुर, म. प्र.

चकमक का सितम्बर अंक प्राप्त हुआ। यह अंक बहुत अच्छा लगा। तितली के पंखों के रंगों के बारे में जानकारी बहुत रोचक है। डॉ. श्रीप्रसाद की 'टीचर' कविता बहुत अच्छी लगी। कार्टून कथा 'जवाब-लाजवाब' पढ़ी। शिक्षक दिवस पर विशेष रूप से प्रकाशित लेख 'हमारे शिक्षक' पढ़कर आनंद आया। 'संख्याओं के खेल' में मज़ा आया।

● *विनोद कुमार सोनी, गढ़ाकोटा, सागर, म. प्र.*

मुझे यह पत्रिका बहुत पसन्द आई। इसे मैं अपने पुत्र के लिए लेना चाहता हूँ, जो कि अभी छह वर्ष का है। आपको इस प्रकाशन के लिए बधाई।

यह पत्रिका मेरे पुत्र प्रहर्ष को एक तो विज्ञान सम्बंधी जानकारी देगी और दूसरा, अच्छी हिन्दी से भी अवगत कराएगी। आज की शिक्षा की यही एक बड़ी कमी है कि अधिकांश शहरों में अच्छी हिन्दी न तो पुस्तकों में है, न ही बोलचाल में।

● *विकास बिष्ट, चण्डीगढ़*

चकमक का अप्रैल,98 अंक यथा समय मिल गया था।

चकमक व संदर्भ से पिछले 5-6 वर्षों से जुड़े होने के कारण व लगातार इतनी मनोरंजक-रोचक व ज्ञानवर्धक जानकारियाँ पाकर, हमें शुरू से ही लगता आया है कि ये दोनों पत्रिकाएँ ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों-किशोरों-विद्यालयों-शिक्षकों तक पहुँचें व सभी इसका लाभ उठाएँ। इसके लिए आजकल एक अभियान चलाया है। हम लगभग हर माह 50-60 पत्र लिखते हैं। हमारे सभी मित्र यहाँ (जेल) से बने हैं। तो सभी को एक-एक बार चकमक व संदर्भ अपने बच्चों को पढ़ाने की प्रार्थना करता हूँ। उन्हें ये भी लिखता हूँ कि पसंद आने पर इसकी सदस्यता ज़रूर ग्रहण कर इसका लाभ सभी को दिलाएँ।

अब चर्चा चकमक की करते हैं। इस बार आपने एक अछूता विषय चुनकर हम सबको नई व मनोरंजक जानकारी दी। वैसे तो मटका बनते व चाक चलते सबने देखा होता है, परन्तु उसकी गहराई में जाकर इस तरह से उन कुम्हारों के दुख–सुख, कार्य की प्रणाली जानकर बड़ा अच्छा लगा। धन्यवाद।

इस बार की बात . . . में आपने बच्चों से चुनाव-सरकार-देश चलाने सम्बंधी चर्चा कर, उनके मन को चेतना देने का तथा हमारे (बच्चों के) अधिकारों को जता, उनकी राय जानने की बड़ी सुन्दर बात कही।

पाठक लिखते हैं

वैज्ञानिक कमला सोहनी के शोधपरक तथ्य पढ़कर भी दूध के विषय में नई जानकारी मिली। साथ ही सोहनी जी की लगन-परिश्रम-धैर्य से प्रेरणा भी। डाक की गड़बड़ी से मार्च अंक में उनकी बातें पढ़ने से वंचित रह गया। ख़ैर।

नीली विपत्ती कहानी बड़ी मनोरंजक व ज्ञानवर्धक लगी। विज्ञान की टेढ़ी बात कहानी में पिरोकर इस तरह समझाने से बच्चे जल्दी समझते है। हमें सदा सूर्य के सात रंगों का आनंद मुफ्त में मिलता है तो हम उसकी कोई कीमत नहीं करते। पर वही रंग गायब हो जाए तो जीवन मुश्किल हो जाए।

इस बार मेरा पन्ना को बहुत कम स्थान दिया, ख़ैर। इसके बदले अन्य ज्ञानवर्धक जानकारी देने का शुक्रिया। अक़्सर हम देखते हैं कि मेरा पन्ना में ज़्यादातर म. प्र. के बच्चों को स्थान मिलता है। अन्य स्थानों तक चकमक की पहुँच नहीं है? या वहाँ के बच्चे स्वयं रचनाएँ भेजते नहीं? वैसे 10% अन्य राज्यों के बच्चों की रचनाएँ रहती हैं पर कम से कम 50% तो होना ही चाहिए न?

आपको तो पहले भी बताया था कि हमारे पास ढेरों लेखकों-सम्पादकों द्वारा लघु-साहित्य पत्र-पत्रिकाएँ हर माह लगभग 60-70 की तादाद में आते हैं। उसी क्रम में 3-4 माह पहले मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चलाए साक्षरता मिशन की जन-वाचन आन्दोलन की छोटी-छोटी 72 पुस्तकों का उपहार हमें मिला। उसी में कुछ पुस्तकों में चकमक में छपी सामग्री देखकर बड़ा अच्छा लगा कि हमारी चकमक की पहुँच बहुत दूर तक है।

शेष फिर! कृपया हमारे पत्र छापा न करें। ज़्यादातर चकमक में बच्चों को ही स्थान दें। वैसे भी जेल का नाम पढ़कर कहीं आपके पाठक नाराज़ न हो जाएँ।

सभी को प्रेम सहित प्रणाम,

आप सबका एक भाई,

● *राजकुमार गुप्ता, नाशिक रोड जेल नाशिक, महाराष्ट्र*

प्रिय राजकुमार भाई,

अन्य पाठकों की तरह आप भी चकमक के एक पाठक हैं। चकमक के बारे में आपकी राय भी हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। और जेल हमारे उस समाज का ही एक हिस्सा है, जिसमें हम रहते हैं। इस पत्र में आपने जिस अभियान का ज़िक्र किया है, वह हम अपने अन्य पाठकों के साथ भी बाँटना चाहते हैं। शायद इस तरह से चकमक की मदद करने की प्रेरणा दूसरों को भी मिले। इसलिए आपकी मनाही के बावजूद हम आपका पत्र छाप रहे हैं। सं।

राजू-रवि

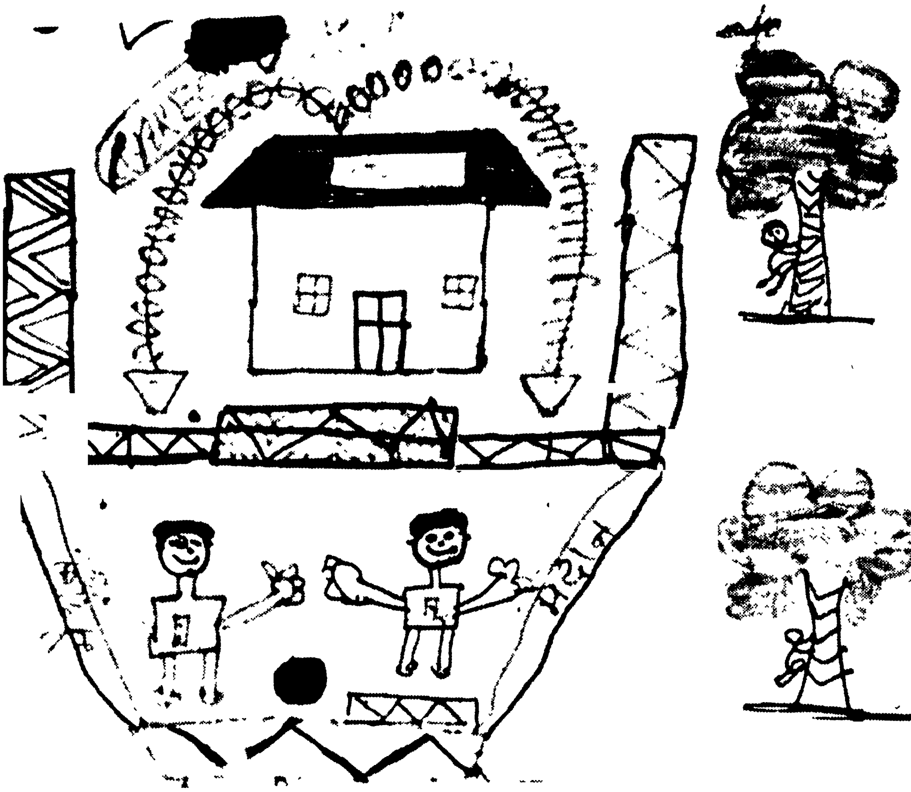

● राकेश गुप्ता, बालागुड़ा, मन्दसौर, म. प्र.

एक स्कूल में दो दोस्त पढ़ते थे - राजू और रवि, दोनों में राजू ज़्यादा शरारत करता था लेकिन दोनों में गहरी दोस्ती थी। छुट्टी होने पर स्कूल के नुक्कड़ तक दोनों साथ-साथ जाते थे। फिर वहाँ से अपने-अपने घर के लिए मुड़ जाते थे। एक बार की बात है, दोनों घर जा रहे थे। अचानक सड़क पर एक गड्ढे में कीचड़ देखकर राजू को शरारत सूझी और उसने एक बड़ा पत्थर उठाकर गड्ढे में फैंक दिया। पत्थर के गिरने से पास चल रहे मास्टरजी पर कीचड़ के छींटे आ गए। मास्टरजी को देखकर राजू तो वहाँ से चम्पत हो गया। अगले दिन मास्टरजी ने दोनों को बुलाकर पूछा तो राजू ने साफ़ झूठ बोल दिया कि उसने कोई पत्थर कीचड़ में नहीं फैंका, परन्तु रवि ने मास्टरजी को सारी बात साफ़-साफ़ बता दी।

इस घटना के कुछ दिन बाद की बात है। मास्टरजी कक्षा में पढ़ा रहे थे कि अचानक एक चाक आकर मास्टरजी को सर पर लगा। मास्टरजी को गुस्सा आया। उन्होंने कड़ककर पूछा कि चाक किसने मारा? तभी राजू की शरारती टोली का एक छात्र जिसका नाम जग्गू था, उठा और उसने मास्टरजी से शिकायत कर दी कि चाक राजू ने ही मारा है। इसलिए मास्टरजी ने सोचा कि चाक राजू ने ही मारा है। जबकि चाक जग्गू ने मारा था। और, यह रवि ने देख लिया था। मास्टरजी ने राजू की एक न सुनी और राजू को खड़ा कर दिया। फिर उसे हाथ आगे करने के लिए कहा। राजू ने हाथ आगे बढ़ाया ही था कि रवि ने मास्टरजी को सारी बात बता दी। मास्टरजी ने जग्गू को बहुत डाँटा। इसके बाद राजू ने रवि से माफ़ी माँगी।

● सुरेन्द्र कुमार प्रजापति, आठवीं, मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान

साँप मिला और गाल छिला

मैं एक बार सिराली जा रहा था तो मेरे भाई अखलेश ने जिद की कि मैं भी चलूँगा तो मैंने कहा कि मैं अभी आ जाऊँगा। वैसे भी तुझे सायकिल पर बैठना नहीं आता, कहीं गिर पड़ा तो हाथ-पैर टूट जाएँगे। उसने बहुत जिद की तो मैंने कहा चल। फिर हम सिराली में घूमे और घर आ रहे थे तो अखलेश को साँप दिखा और वह डरके मारे गिर गया तो उसका गाल छिल गया। और वह खूब रोया फिर उसे डॉक्टर को दिखाया और वह अच्छा हो गया।

● मुकेश कुमार वर्मा, सातवीं, सिराली, होशंगाबाद, म. प्र.

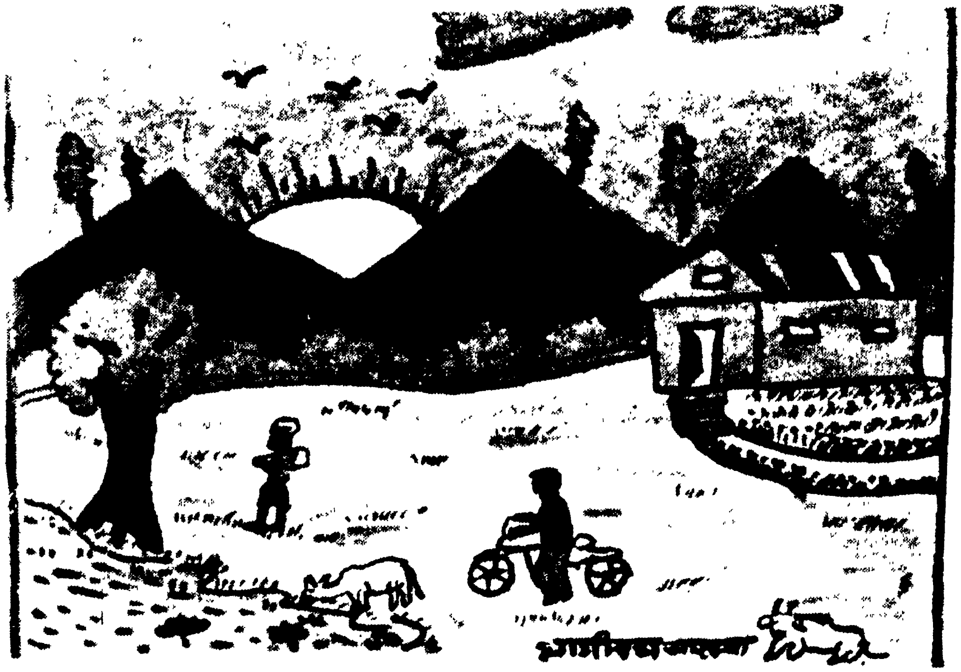

● भागीरथ सारस्वा, सातवीं, कालू, बीकानेर, राजस्थान

मेरी सायकिल

मैं और मेरा दोस्त महेन्द्र हम बहुत पक्के साथी हैं। हम दोनों साथ ही पढ़ते हैं साथ ही खेलते हैं और दोनों मिलकर साथ ही स्कूल का कार्य करते हैं। वो मेरे से एक-डेढ़ महीना बड़ा है। उसको सायकिल चलाना आती है और मुझे नहीं आती। एक दिन हम दोनों उसकी सायकिल लेकर सीखने गए। मैं सायकिल सीख रहा था। और वह सिखा रहा था। तभी रास्ते में काँटे का झुंड आ गया और सायकिल काँटों के झुंड में घुस गई और पंचर हो गई। मुझे भी काँटे लगे। उसी दिन से हम उसकी सायकिल उस रोड पर नहीं ले जाते हैं।

● महेश पांचाल, आठवीं, उज्जैन, म. प्र.

मेरा पन्ना

कुहू-कुहू और कुकड़ूँ कू

मुर्गा बोला कुकड़ूँ कू
हुआ सबेरा कुकड़ूँ कू
उठो-उठो अब कुहू-कुहू
कोयल बोली कुकड़ूँ कू
अभी देर है सोने दो
मीठे सपनों में खोने दो
मुर्गा बोला कुकड़ूँ कू
हुआ सबेरा कुकड़ूँ कू
उठ भी जाओ कुहू-कुहू
कोयल बोली सोने दो
मुर्गा बोला कुकड़ूँ कू
उठो-उठो अब कुहू-कुहू
आमों की डालों पर गाओ
गाकर सबका मन बहलाओ
उठ गई कोयल कुहू-कुहू
खुश हो मुर्गा कुकड़ूँ कू

● पारुल बत्रा, ग्यारह वर्ष,
टीकमगढ़, म. प्र.

● कल्याणी पासवान, पाँचवीं, विकासपुरी, नई दिल्ली

कहानी जूते की

जूता कहता है कि मैं पहले कारखाने के कोने में पड़ा रहा। इसके कई दिन बाद मुझे उठाया गया। फिर मुझमें कुछ कीलें ठुकीं। फिर मुझमें पालिश किया गया। फिर मुझे पोटली में बाँधा। फिर कुछ दूर तक मैं गाड़ी में झूलता गया। फिर मुझे ऊपर से नीचे पटक दिया गया। इसके बाद एक ठेले में कुछ दूर तक झूलता गया। फिर मुझे एक काँच के शोकेस में रखा गया। कुछ दिन तक शोकेस में बैठा-बैठा दिखता रहा। कई लोग आते-जाते थे कोई -कोई मुझे अपने पैरों में डालते थे। एक सज्जन ने मुझे ख़रीद लिया। फिर उसके यहाँ उसके पैरों में डला रहा। फिर मैं टूट गया। तो एक सायकिल वाले ने मुझे ख़रीद लिया। और, कुछ दिन बाद मैं फिर कारखाने में आ गया।

● दिवाकर पटैरिया, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

साँप और काबर

मैं खेलने जा रहा था। एक लड़की ने मुझे बुलाया और कहा कि देखो साँप-साँप। मैं और मेरा भाई वहाँ गए और देखा तो साँप महुए के पेड़ पर चढ़ रहा था। पेड़ पर एक बखोले में काबर के कुछ अंडे थे। कुछ काबर मिलकर साँप को चोंच मार-मारकर भगाने का प्रयत्न कर रहे थे। फिर भी साँप बखोले में जा रहा था। साँप ने एक काबर को डस लिया। काबर नीचे आ गिरी। तभी हमने काबर को उड़ाने का प्रयत्न किया फिर भी वह उड़ नहीं सकी। थोड़ी देर बाद काबर चलती-चलती सामने के खेत में गई फिर उड़ गई। साँप बखोल में घुसकर अंडे खा गया। फिर साँप धीरे-धीरे उतर गया। और हम भाग गए। साँप को अंडे खाते हुए हमने पहली बार देखा।

● किरण सोनेजी, बारह वर्ष, साकवा, गुजरात

● भार्गव भाई सोनेजी, नौ वर्ष, साकवा, गुजरात

कोयल

काली काली कोयल बोली
वह तो डाल डाल पर डोली
सूरत कितनी भोली भोली
इसकी शान निराली
कुहू कुहूकर क्यों चिल्लाती
क्या दादी की याद सताती
आओ कोयल रानी आओ
अपने घर का हाल सुनाओ

गिरिराज सिंह सिकरवार, पाँचवीं,
पंचमपुरा, मुरैना, म. प्र.

क्या इनको बीज मानोगे?

सुशील जोशी

यदि तुमसे कोई पूछे कि बीजों का एक ऐसा गुण बताओ जो सारे बीजों में पाया जाता है, तो तुम क्या बताओगे? यही ना, कि बीज को बोएँगे तो वह उगेगा और पौधा बनेगा? अब तुमसे कोई कहे कि उसने ऐसा बीज तैयार किया है जो उगता नहीं है, तो तुम उसे क्या कहोगे? मैं तो कहूँगा पागल है, मज़ाक कर रहा है। ऐसा भी कोई बीज होता है? पर अब तुम्हें क्या बताऊँ, कुछ वैज्ञानिकों ने ऐसे बीज बना लिए हैं। तो ज़रूर तुम्हारे मन में सवाल आएगा कैसे बना लिए? और उससे भी बड़ा सवाल आएगा कि क्यों बना लिए?

इन्हीं सवालों का जवाब देने के लिए लिख रहा हूँ। इन सवालों का जवाब हमारी खेती से है, इनका सम्बंध हमारे भोजन से है, हमारे जीवन से है। सबसे पहले तो यह समझ लें कि ये न उगने वाले बीज हैं क्या बला। मान लो तुम किसान हो। तुम हर साल अपनी फसल उगाते हो और फसल आने के बाद थोड़े बीज बचाकर रख लेते हो कि अगले साल बोएँगे यानी तुम बाज़ार से बीज नहीं लाते। मगर एक साल किसी कारण से तुमने बाज़ार से बीज लिए। लाकर बोए, फसल काटी और अपनी आदत के हिसाब से थोड़े बीज बचा लिए। अगले साल जब तुम इन्हें बोओगे तो ये उगेंगे ही नहीं। यानी यदि एक बार ये बीज ले आए तो फिर हर साल बाज़ार से ही बीज लाने पड़ेंगे।

अब आते हैं अपने पहले सवाल पर। कैसे बनाए ऐसे बीज? इसके लिए वैज्ञानिकों ने प्रकृति की ही चीज़ों में फेरबदल किया। तुम्हें शायद पता होगा कि सजीवों के गुण तय कैसे होते हैं। सजीवों के शरीर की कोशिकाओं में गुणसूत्र होते हैं। इन गुणसूत्रों पर एक पदार्थ पाया जाता है जिसका नाम है डी.एन.ए.। यह डी.एन.ए. ही तय करता है कि उस जीव के गुण-रूप क्या होंगे। वैसे कई गुण पर्यावरण के द्वारा भी बनते हैं। डी.एन.ए. की छोटी-छोटी इकाईयों को जीन कहते हैं। प्रत्येक जीन किसी एक प्रोटीन के निर्माण का साँचा होता है। अर्थात जीन अपना करतब प्रोटीनों की मार्फत करते हैं।

तो अब वापिस लौटते हैं बीज पर। जब बीज पकने वाला होता है तो उसमें एक जीन सक्रिय हो जाता है। यह जीन बीज को अंकुरित होने का संदेश देता है। इसे हम अंकुरण जीन कह सकते हैं। मगर इस जीन को सक्रिय करने का काम एक और जीन द्वारा किया जाता है जिसे नाम दिया गया है एल.इ.ए.। अर्थात पहले एल.इ.ए. सक्रिय होकर वह अंकुरण जीन को जगाएगा ।

बीजों में एक और जीन पाया जाता है। इसे हम अंकुरणरोधी जीन कह सकते हैं। यह आम तौर पर सोया पड़ा रहता है यानी निष्क्रिय रहता है।

वैज्ञानिकों ने क्या किया कि एल.इ.ए. का संबंध अंकुरण जीन से समाप्त करके अंकुरण रोधी जीन से जोड़ दिया। अब जब बीज परिपक्व होने लगता है तो एल.इ.ए. जीन अंकुरण जीन को सक्रिय करने की बजाय अंकुरणरोधी जीन को सक्रिय कर देता है। बस हो गया काम। बीज तो बना मगर अंकुरित नहीं होगा।

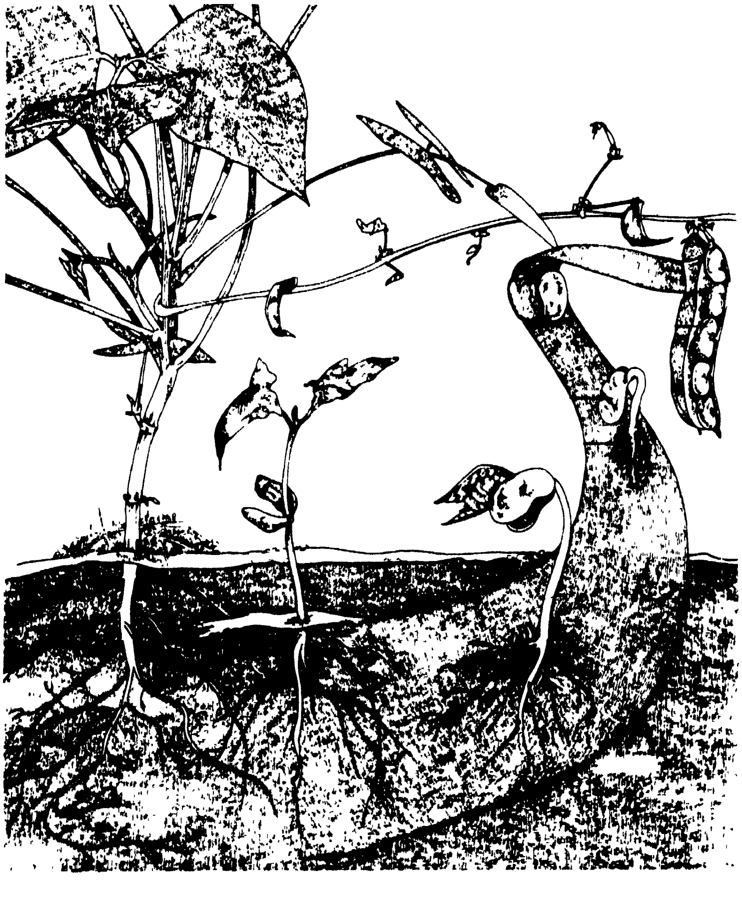

जीन के साथ इस तरह की छेड़छाड़ या फेरबदल करने का काम आजकल जिनेटिक इंजीनियरिंग कहलाता है।

अब हम दूसरे सवाल पर आते हैं। आख़िर ऐसा बीज बनाने की ज़रूरत क्या है? जैसा मैंने ऊपर बताया कि जिनेटिक इंजीनियरिंग के द्वारा आजकल वैज्ञानिक जीवों की जीन रचना में फेरबदल कर सकते हैं। आजकल यह भी सम्भव हो गया है कि एक जीव का कोई जीन निकालकर दूसरे जीव में फिट कर दिया जाए। तो इस विधि का उपयोग करके वैज्ञानिक लोग रोज़ नए-नए क़िस्म के पेड़-पौधे, जीव-जन्तु बनाने में लगे हैं।

जैसे गेहूँ में गेरूआ रोग लग जाता है, हो सकता है कि अन्य किसी पौधे में गेरूआ न लगता हो। तो वैज्ञानिक उस पौधे में देखेंगे कि क्या उसमें ऐसा जीन है जो उसे गेरूए से बचाता है। यदि है तो उसे वहाँ से लेकर गेहूँ में फिट कर देंगे। अब इस गेहूँ को भी गेरूआ से लड़ने की ताक़त मिल गई।

इसी प्रकार से मान लो धान में किसी प्रोटीन की कमी है। तो उस प्रोटीन का जीन कहीं से लाकर धान में लगा दिया। या मान लो कोई खरपतवार नाशक रसायन है। उसे छिड़कने से खरपतवार तो मर जाती है मगर फसल को भी नुकसान होता है। ज़ाहिर है कि किसान ऐसा रसायन अपने खेत में नहीं डालेंगे। तो कोई वैज्ञानिक कहीं से ऐसा जीन ढूँढ निकालता है जो इस रसायन से लड़ सके। इसे लाकर फसल के बीजों में फिट किया तो अब उस फसल पर खरपतवार नाशक का प्रभाव नहीं होगा। अब किसानों को बता सकते हैं कि मज़े से रसायन छिड़को। तो कम्पनी का रसायन बिकने लगेगा। परन्तु एक बात है कि इस रसायन का छिड़काव तभी ठीक रहेगा जब उस ख़ास जीन से युक्त बीज बोया जाए। कम्पनी वह बीज भी बेचेगी और रसायन भी।

परन्तु एक समस्या है। समस्या किसान के लिए नहीं वैज्ञानिकों और कम्पनी के लिए है। जिनेटिक इंजीनियरिंग से ऐसे बीज बनाने में बहुत पैसा ख़र्च होता है। कोई कम्पनी वैज्ञानिकों से यह काम करवाती है, पैसा खर्च करती है। वह बीज को बेचकर मुनाफ़ा भी कमाना चाहेगी। तो वह इस बीज को पेटेन्ट करवा लेती है। मतलब अब कोई और व्यक्ति इस या ऐसे बीज का धन्धा नहीं कर सकता। यानी ऐसे बीज चाहिए तो उसी कम्पनी के पास जाना पड़ेगा। अब आती है समस्या। मान लो मैं गया उस कम्पनी के पास और ख़रीद लाया एक किलो बीज। उन्हें बोऊँगा तो 20-25 किलो बीज मिल जाएँगे मुझे। अब मैं फिर से कम्पनी के पास क्यों जाऊँ? मज़े में अपने बीज बचा-बचाकर काम चलाता रहूँगा। तो कम्पनी का धन्धा तो चौपट हो जाएगा। फिर पेटेन्ट का क्या फ़ायदा रहा? इसलिए अपने पेटेन्ट की रक्षा करने के लिए और अपना बीज बेचने के लिए कम्पनियों ने अंकुरणहीन बीज बनाए हैं। इनसे कम्पनी को फ़ायदा यह होगा कि हर साल किसान को कम्पनी से ही बीज ख़रीदना होगा। तो किसान के हाल क्या होंगे? और फसल के दाम पर क्या असर पड़ेगा?

ऐसे बीजों का एक ख़तरा और है। मान लो कुछ लोगों ने यह अंकुरणहीन बीज बो दिया। आसपास सामान्य फसल लगी है। अब हो सकता है कि अंकुरणहीन पौधों के परागकण सामान्य फूलों को परागित कर दें और यह जीन वहाँ भी पहुँच जाए। तब सामान्य फसल से उत्पन्न बीज भी नहीं उगेंगे। इसलिए इन अंकुरणहीन बीजों के अविष्कार ने खेती बाड़ी के क्षेत्र में तहलका मचा दिया है। सब लोग चिन्तित हैं। और कम्पनियाँ कह रही हैं कि हमें तो अपने पेटेन्ट व मुनाफे की रक्षा से मतलब है।

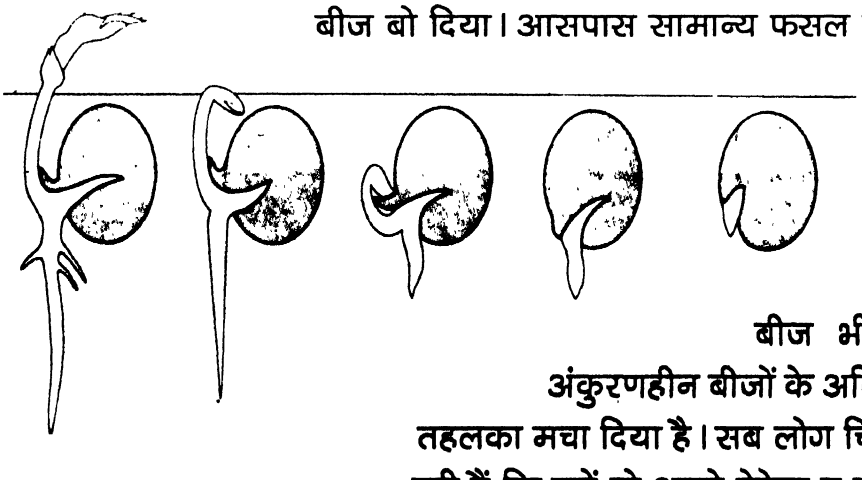

तुम्हें क्या लगता है, इस बारे में क्या करना चाहिए? जवाब लिखोगे तो बात आगे बढ़ाएँगे।

चित्र : बायोलॉजी फॉर लाइफ़ और बायोलॉजी : दुबे एंड दुर्मोरो से साभार और फोटो म. प्र. माध्यम के सौजन्य से।

मेरा पन्ना

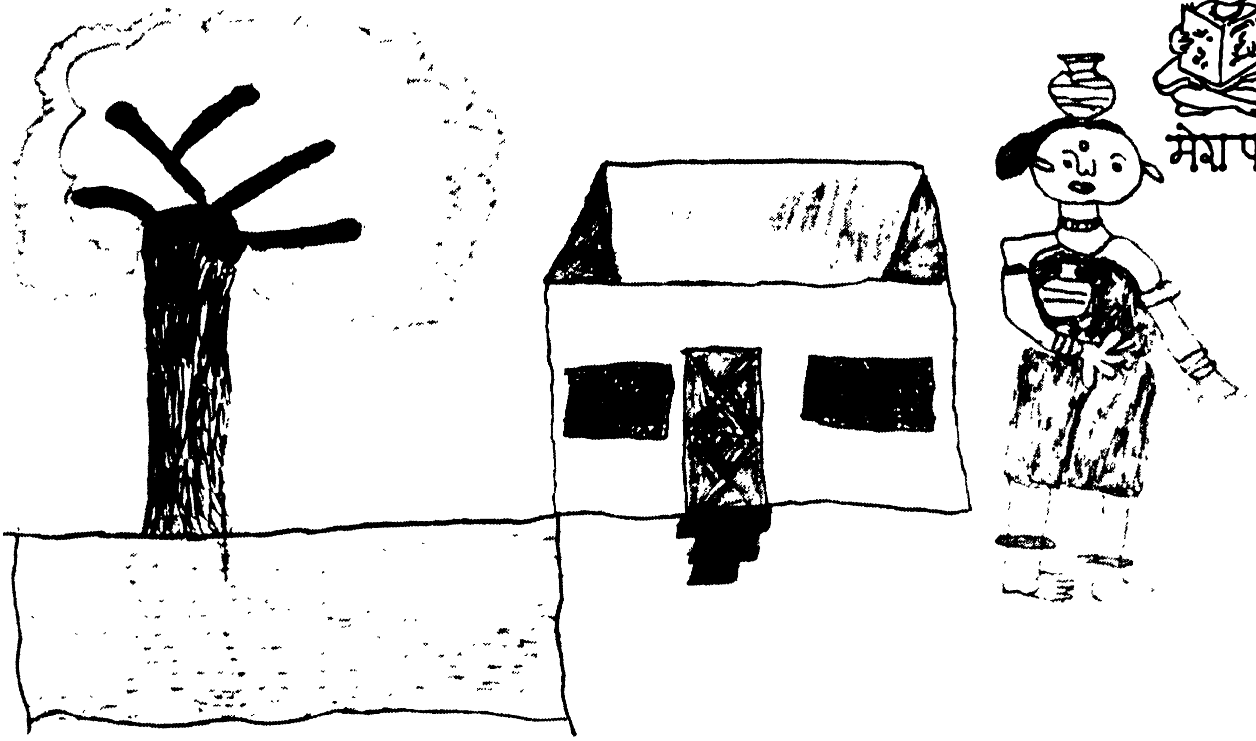

उज्जवल तिवारी, चौथी, बड़ान्जी, जगदलपुर, म. प्र.

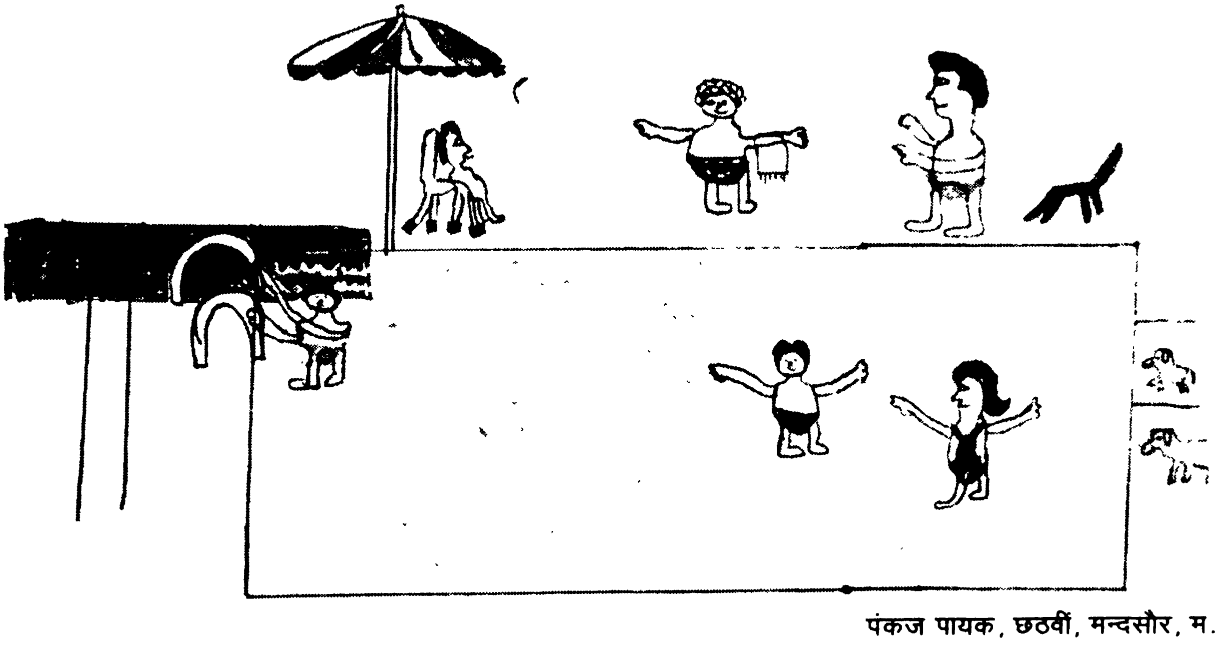

पंकज पायक, छठवीं, मन्दसौर, म. प्र.

खेल कागज़ का

लालटेन

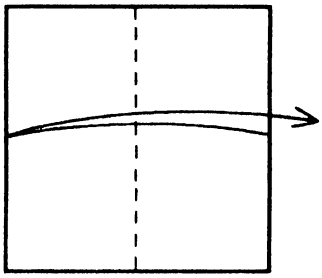

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाकर खोल लो।

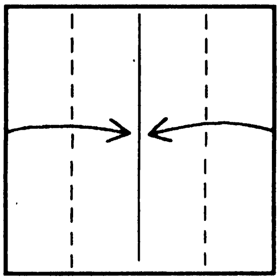

अब बीच के मोड़ के निशान तक लाकर दोनों किनारों को चित्र के अनुसार टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ो।

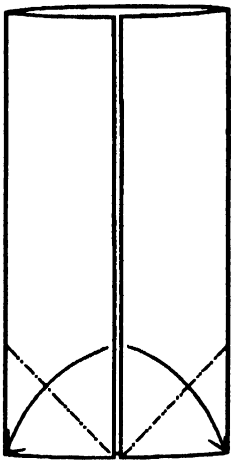

3. चित्र में दिख रही रेखा-बिन्दु वाली रेखाओं पर से पीछे की तरफ मोड़ बनाओ।

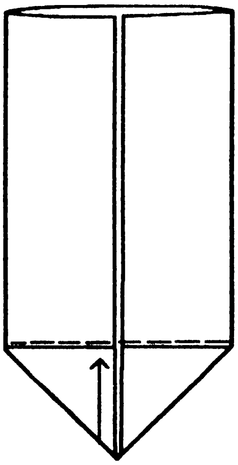

4. इस तरह। अब चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

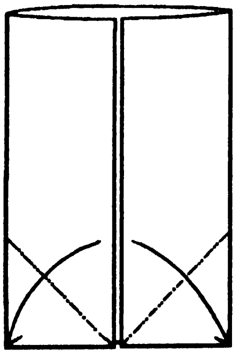

5. अब चित्र में दिख रही रेखा-बिन्दु वाली रेखाओं पर से पीछे की ओर मोड़ बनाओ।

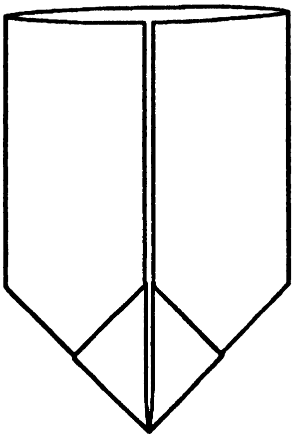

6. इस तरह की आकृति दिखेगी।

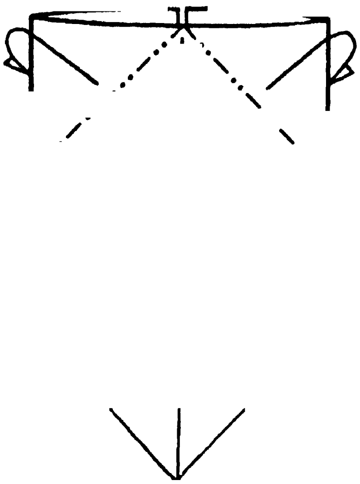

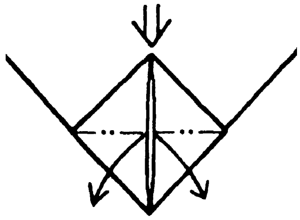

7. आकृति में नीचे दिख रहे छोटे वर्ग को खोलो। किनारों को खोलते हुए तीर की दिशाओं में ले जाओ।

8. अब आकृति के ऊपर की ओर दिख रही रेखा-बिन्दु वाली रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में पीछे की तरफ मोड़ो।

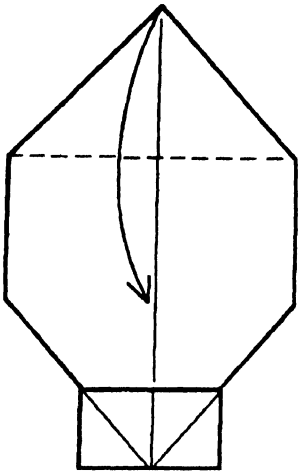

9. इस तरह। टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

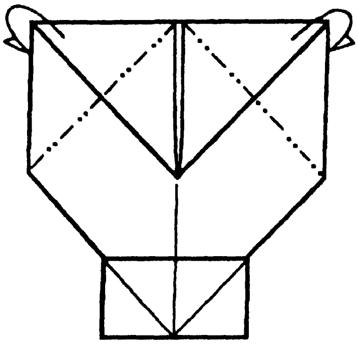

10. ऐसे। अब रेखा-बिन्दु वाली रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में पीछे की तरफ मोड़ बनाओ।

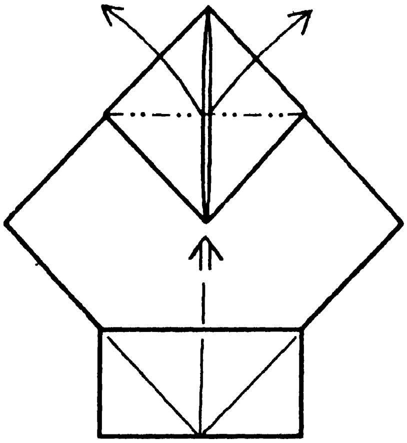

11. ऐसी आकृति बनी। अब ऊपर बने इस छोटे वर्ग को भी खोलना है। वर्ग के किनारों को तीर की दिशाओं में खोलो।

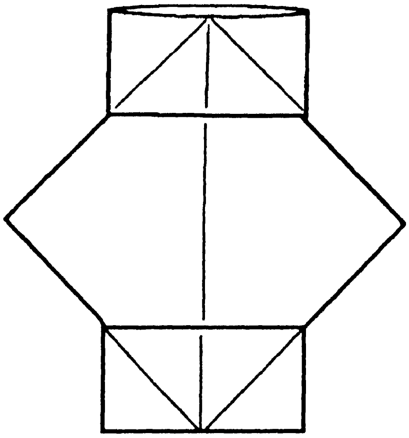

12. यह इस तरह की आकृति बन गई। इसे लालटेन भी कहते हैं।

मेरा पन्ना

सोनिया और दादी

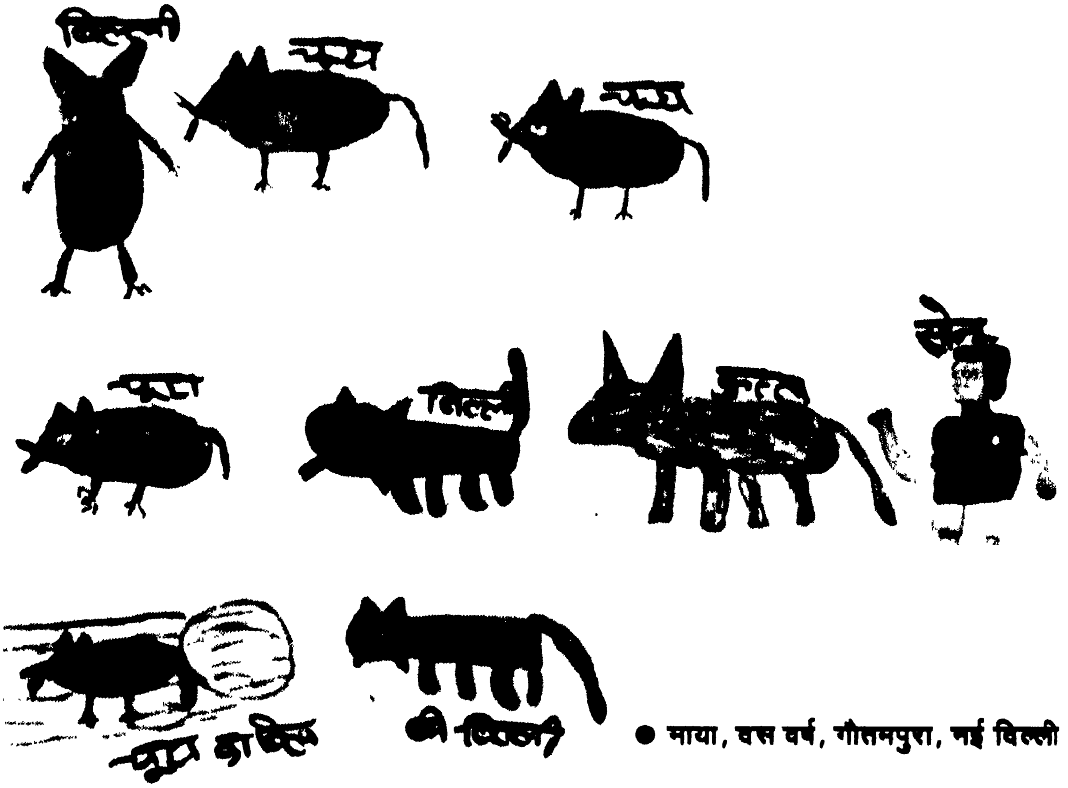

● माया, दस वर्ष, गौतमपुरा, नई दिल्ली

एक लड़की थी उसका नाम सोनिया था। वह अपनी दादी के साथ रहती थी। सोनिया कक्षा तीन में पढ़ती है। एक दिन सोनिया ने देखा कि एक बिल्ली चूहों का पीछा कर रही है। चूहे चूँ चूँ करके दुम दबाकर बिल में घुसने लगे। सोनिया को चूहों पर दया आई। सोनिया ने बिल्ली को भगा दिया। धीरे-धीरे चूहों के साथ उसकी दोस्ती हो गई।

दादी को सोनिया और चूहों का खेल अच्छा नहीं लगा। दादी ने चूहों को भगाने का उपाय सोचा। दादी ने सोचा कि क्यों ना एक बिल्ली पाल लूँ। तब इन चूहों की ख़ैर नहीं। दादी बाज़ार से बिल्ली ख़रीद लाई। बिल्ली चूहों को बहुत परेशान करने लगी। कुछ देर बाद सोनिया स्कूल से आई तो देखा कोई बाहर नहीं दिखाई दे रहा है, सन्नाटा छाया हुआ है। तब सोनिया ने दादी के कमरे में जाकर देखा तो दादी एक बिल्ली को दूध पिला रही हैं। तब सोनिया को गड़बड़ घोटाला समझ में आया। तो सोनिया ने चूहों की बैठक बुलाई। तब तय किया कि बिल्ली को टी. वी. देखने की दावत देनी चाहिए। अगर बिल्ली टी. वी. देखेगी तो उसकी आँखें ख़राब हो जाएँगी। तब वह चूहों को कैसे ढूँढेगी।

दूसरे दिन बिल्ली को टी. वी. देखने की दावत दी। बिल्ली रोज़ टी. वी. देखने लगी। कुछ दिनों बाद उसकी आँखें ख़राब हो गईं। तब दादी ने बिल्ली को चश्मा लाकर दिया। बिल्ली फिर भी बाज नहीं आई। तब सोनिया ने फिर बैठक बुलाई फिर तय किया कि बिल्ली का चश्मा छुपा दिया जाए। बिल्ली का चश्मा चूहों के बिल में छुपा दिया। फिर दादी से कहा - दादी चश्मा तब मिलेगा जब बिल्ली चूहों को नहीं पकड़ेगी और साथ रहेगी। दादी ने कहा- ठीक है। फिर वे सब एक हो गए और हँसी ख़ुशी खेलने लगे, रहने लगे।

● तसलीन बी, आठवीं, धार, म. प्र.

गिलहरी

कहते हैं हम इसे गिलहरी
सभी निराले इसके ढंग
पेड़ों से यह नीचे आती
फिर पेड़ों पर यह चढ़ जाती
कुतर-कुतर यह फल खाती
बच्चों का यह मन बहलाती
इसका रंग है भूरा- काला
आँखों को लगती है प्यारी
बच्चे इसके पीछे पड़ते
फिर भी इसे पकड़ न पाते
इधर-उधर यह चढ़ जाती
ऊँचे पेड़ों पर चढ़ जाती
बच्चे सारे जब थक जाते
अपने-अपने घर को जाते
तब कहीं इसे मिलता आराम
फिर घोंसले में करती विश्राम

● **रितेश सिंह, नौवीं, मथुरा, उ. प्र.**

श्रुतिप्रिया, दूसरी, नई दिल्ली

तारे का टूटना

पिछले साल की बात है। गर्मियों के दिन थे। मैं और मेरे भाई-बहिन हमारे घर के बाहर बैठे हुए थे। साथ ही पड़ोस की कुछ औरतें व बच्चे भी थे। रात के नौ बजे थे। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। हम सब आपस में बातें कर रहे थे।

अचानक आकाश में तेज़ चमक के साथ तारा टूटा। सभी एक-दूसरे की ओर आश्चर्य से देखते रहे। तभी किसी औरत ने कहा कि तारा टूटना बहुत ही अशुभ है। यह विनाश का सूचक है। यदि तारा टूटे तो समझो कि मनुष्यों पर भार है, यानि मनुष्यों के विनाश होने की सम्भावना है। तभी मेरी दादी जी ने कहा कि कल देवता को नारियल चढ़ाकर कष्ट का निवारण करेंगे। इस प्रकार की धारणाएँ देखकर मुझे दुख हुआ। मैंने मेरे भाई-बहनों को बताया कि यह तारा नहीं टूटा है, यह उल्का है। यह कोई अशुभ का सूचक नहीं है। यदि कोई उल्का पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण केंद्र में आ जाए तो तेज़ चमक के साथ जलकर राख हो जाती है। मेरे पापा ने मुझे इस प्रकार बताते देखा तो बहुत खुश हुए।

● **निरंजन कुमार गोपालन, चौदह वर्ष, हिंगोनियाँ, अजमेर, राजस्थान**

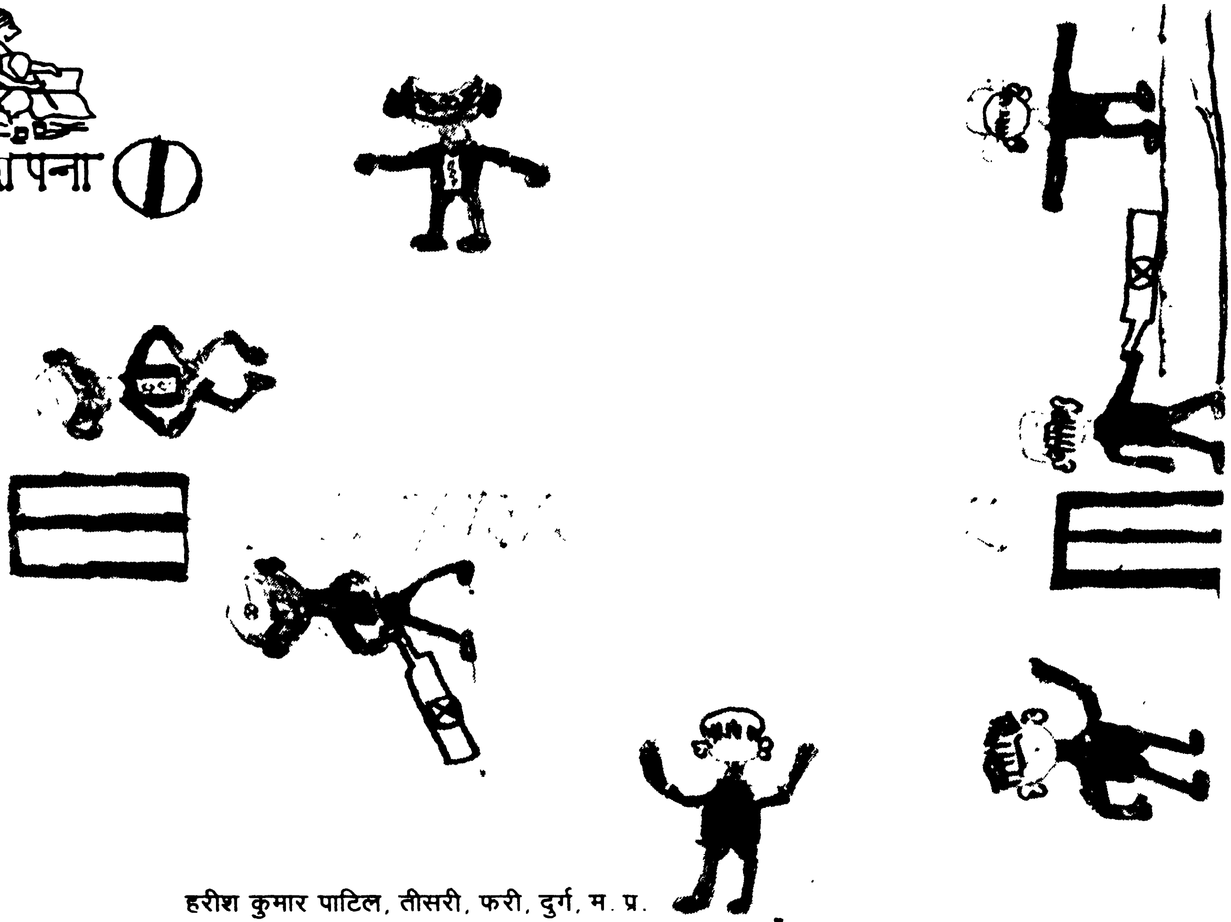

हरीश कुमार पाटिल, तीसरी, फरी, दुर्ग, म. प्र.

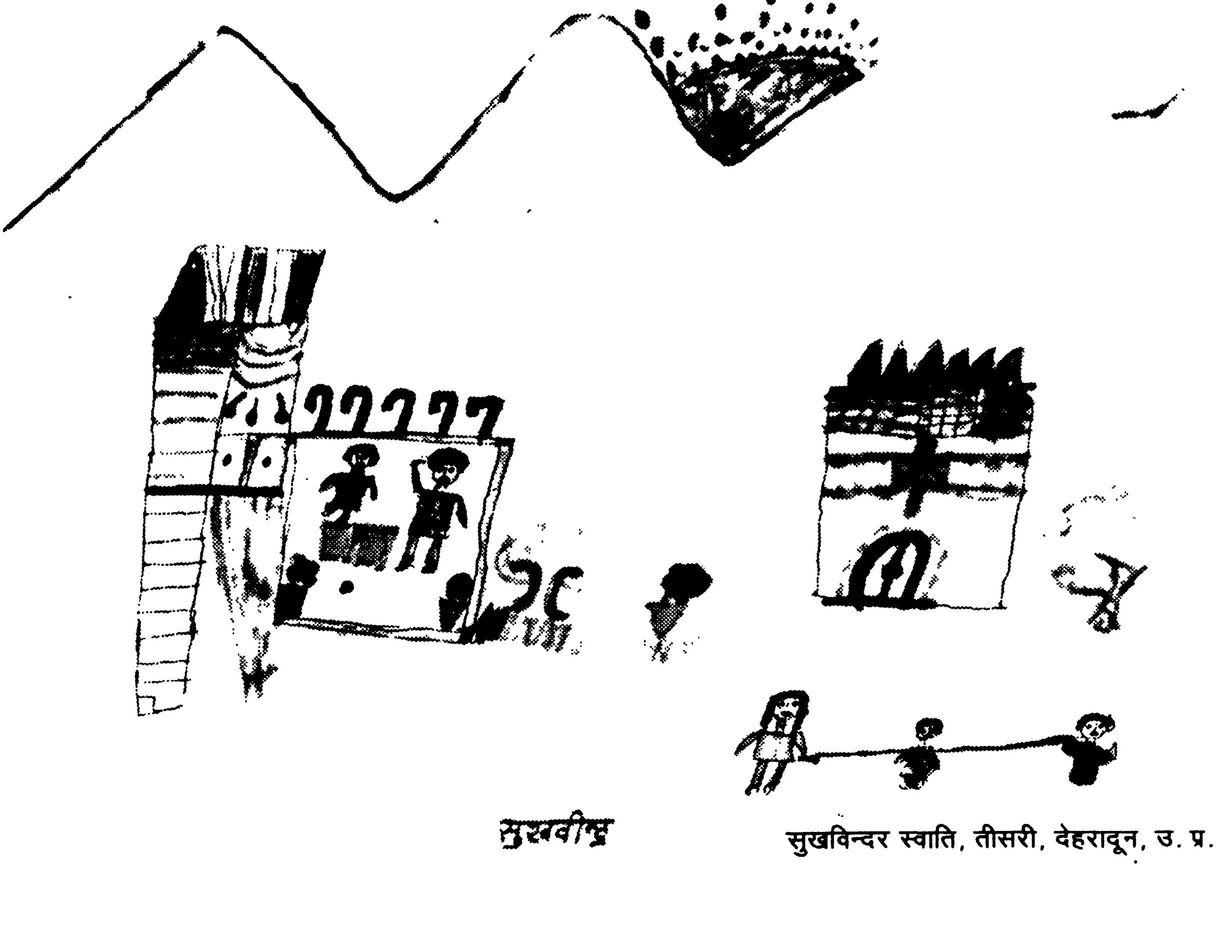

सुखविन्दर स्वाति, तीसरी, देहरादून, उ. प्र.

भूरी

हमारे मुहल्ले में एक कुत्ती रहती थी। उसका नाम भूरी था। वह बहुत ही अच्छी कुत्ती थी। उसने बच्चे दिए थे। और उसके सभी बच्चे मर गए केवल एक बच्चा बचा था। वह बड़ा हो गया। लेकिन एक ख़तरनाक कुत्ती आई और उसे खा गई। और कुत्ती उदास रहती है।

● कहानी एवं चित्र : आशुतोष, चौथी, बड़वानी, खरगोन, म. प्र.

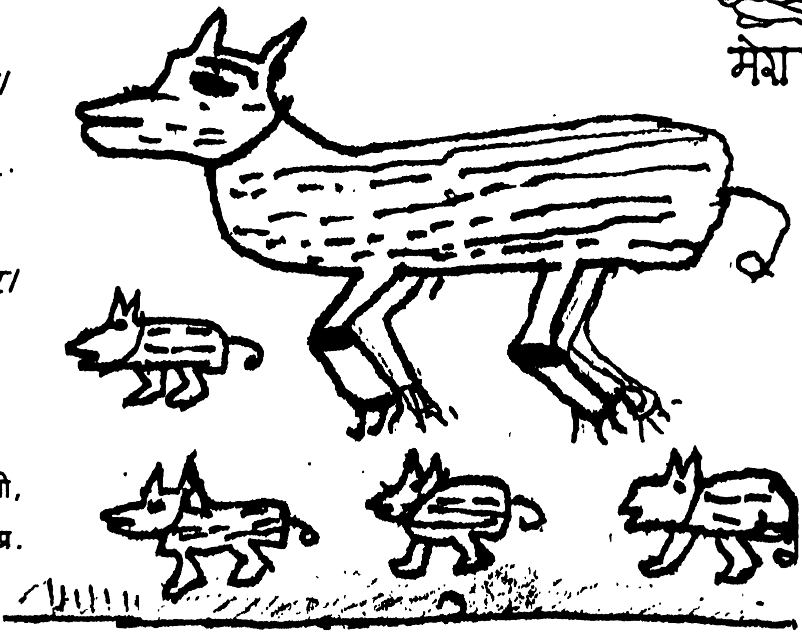

सायकिल दुर्घटना

एक दिन मुझसे मेरे शिक्षक ने गणित बनाकर मँगवाए थे। उसके दूसरे दिन सुबह मैंने 8.30 को गणित बनाना शुरू किया तो 10 बजकर 30 मिनट पर बना। फिर मुझे लेट्रिन लगी मैं सायकिल पकड़कर तालाब गया। तालाब को लोग पूरेहना तालाब के नाम से पुकारते हैं। फिर मैं तालाब से वापिस लौटा। रास्ते पर मेरा स्कूल था। स्कूल से आगे निकलते ही अचानक एक लड़की जा रही थी। मेरी सायकिल तेज़ी से चल रही थी। तेजी से चलने के कारण मैं सायकिल को रोक नहीं पाया। लड़की के पैर पर मेरी सायकिल चढ़ गई। पास ही पुलिस थाना था। वहाँ के हवलदार ने मुझे पकड़ लिया। लड़की आठ वर्ष की थी मैं उसे अस्पताल ले गया। उस लड़की के पैर में मोच आ गई थी। मैंने उसे डॉक्टर को दिखाया डॉक्टर ने उसे इन्जेक्शन लगाया और गोलियाँ दीं। हवलदार ने मेरी सायकिल ज़प्त कर ली। मुझे थाने पर बैठाया। मैं तीस मिनट तक थाना पर बैठा। फिर लड़की की माँ को बुलाया और मेरे पिताजी को बुलाया। मेरे पिताजी को बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ी। फिर मुझे छोड़ दिया।

● जगदीश प्रसाद साहू, नौवीं, गिधपुरी, रायपुर, म. प्र.

सह - शिक्षा

इस बार पढ़ो लड़के और लड़कियों के साथ- साथ पढ़ने या अलग- अलग पढ़ने के बारे में तुम्हारे कुछ दोस्त क्या सोचते हैं।

सह-शिक्षा अच्छी पद्धति है। इसमें पढ़ने से लड़कियों के साथ बातचीत करना और उनके प्रति व्यवहार की समझ आती है।

अच्छा लगता है, इससे प्रतियोगिता की भावना बढ़ती है; जिससे हम ज़्यादा अच्छे से पढ़ाई कर पाते हैं।

लड़कियों की अपेक्षा लड़के ज़्यादा हेल्पफुल होते हैं, क्लास में, पढ़ाई के दौरान मदद मिलती है

वे लड़कियाँ जो गर्ल्स स्कूल में पढ़ती हैं, उनमें और अपने में हम फ़र्क महसूस करते हैं।

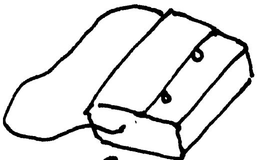

कुछ टीचर लड़कियों और लड़कों में भेदभाव करते हैं

अलग-अलग पढ़ो तो लड़कों को समझ नहीं पाते, ग़लत समझने लगते हैं

बराबरी की भावना का विकास होता है।

लड़के-लड़कियों के साथ पढ़ने से आत्मविश्वास बढ़ता है, और हम सीख पाते हैं कि स्कूल से बाहर कैसा व्यवहार करना है।

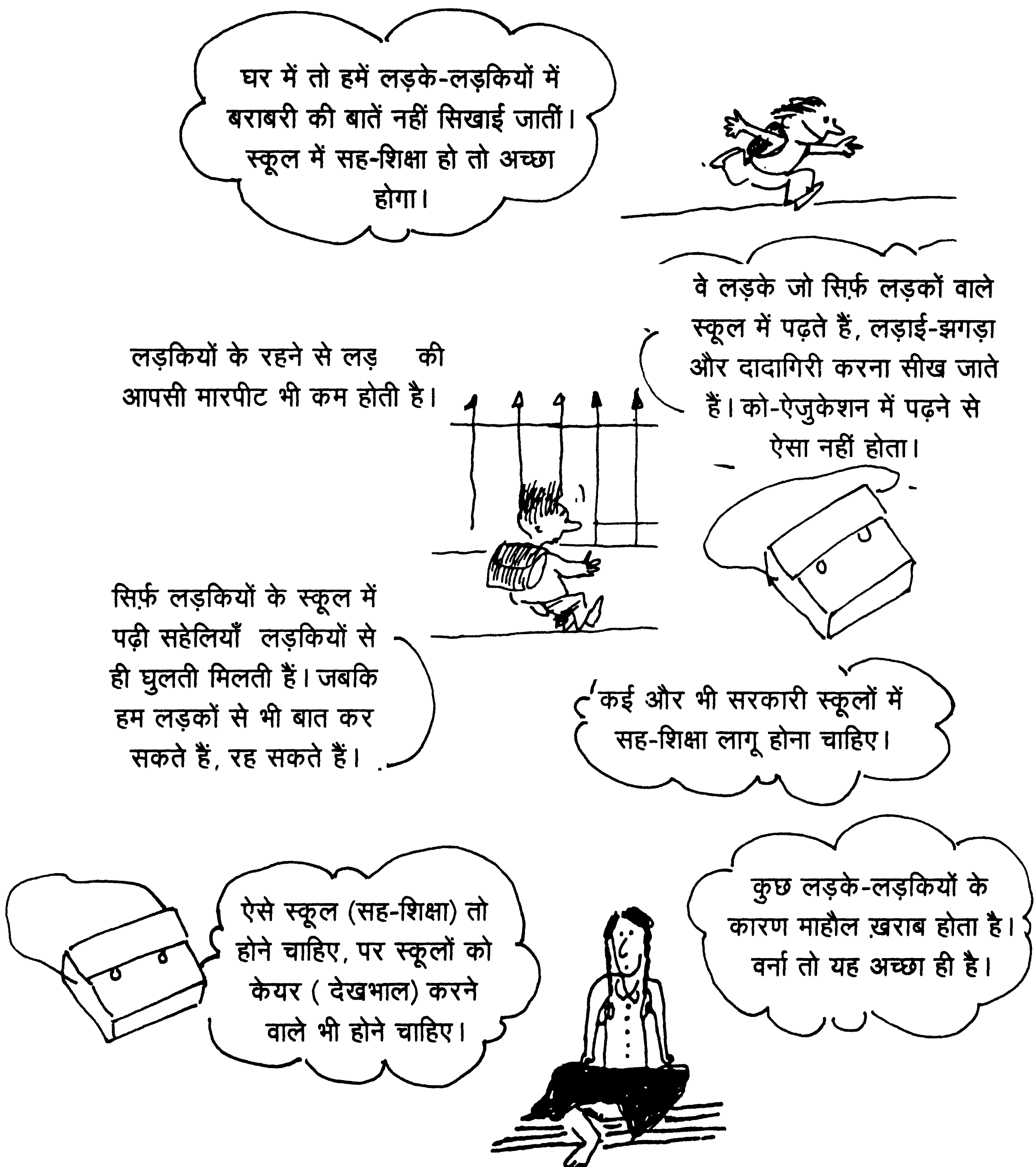

चित्र : ख़तरा स्कूल से साभार।

इस बार भोपाल के स्कूलों के इन छात्रों से बातचीत हुई : आनंद विहार स्कूल के सातवीं कक्षा के कमलेश, मोहित, वैभव, आनंद, कपिल, उत्तार्श अभिनव, हर्षित, अभिषेक, लोचन, ऋषिकेश, रतनेश, अपूर्व, परिक्षित। आठवीं के श्वेता मुदलियार और प्रिया श्रीवास्तव। नौवीं के पूजा तिवारी, वैशाली, प्रभजोत कौर, दीप्ती दुबे, जैकी जॉय, मोनिका गर्ग, नेहा जैन और डिंकी बजाज। शा. उ. मा. विद्यालय हमीदिया (बालक) के छात्र : प्रेम सिंग, राजेश सोनी, शाहिद, मनोज कुमार, कमल परिहार, परवेज़। राजा भोज उ. मा. स्कूल के अरुण पटेल, श्रीराम कुशवाहा, सुनील मीना, गोमती गुप्ता, शहाना खान।

मेरा पन्ना

गाजर का हलुआ

गाजर के हलुए कि बात निराली,
एक कटोरी भर लो खाली,
हलुए में है किसमिस डाली,
एक कटोरी भर लो खाली,
दूध - मलाई - मावा डाला,
गाजर घिसकर हाथों को मारा,
अब तो आई पकाने कि बारी,
एक कटोरी भर लो खाली,
शक्कर डाली - इलाईची डाली,
हिला - हिला कर जान निकाली,
टी.वी. पर चित्रहार आ गया,
भूल उसे गाने में ध्यान आ गया,
घर जब आए मम्मी - डैडी,
हलुआ जल कर हो गया रेडी,
गाजर के हलुए कि बात निराली
एक कटोरी भर लो खाली,

कविता तथा चित्र : स्वाति चौधरी, छठवीं, उदयपुर, राजस्थान

नाव की सवारी

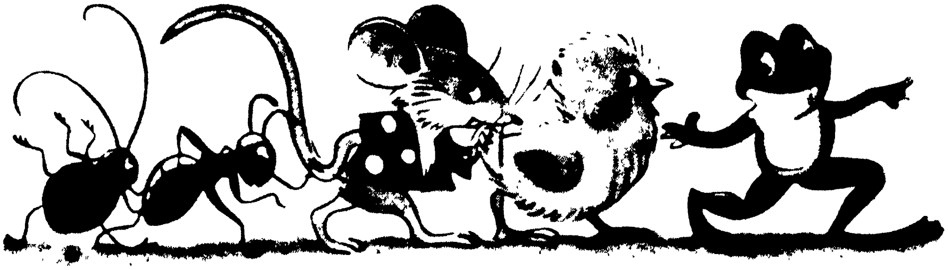

एक मेंढक, एक चूजा, एक चूहा, एक चींटी और एक गुबरैला सब सैर को निकले। चलते-चलते वे एक झील के किनारे जा पहुँचे।

"चलो तैरें", कहकर मेंढक पानी में कूद गया।

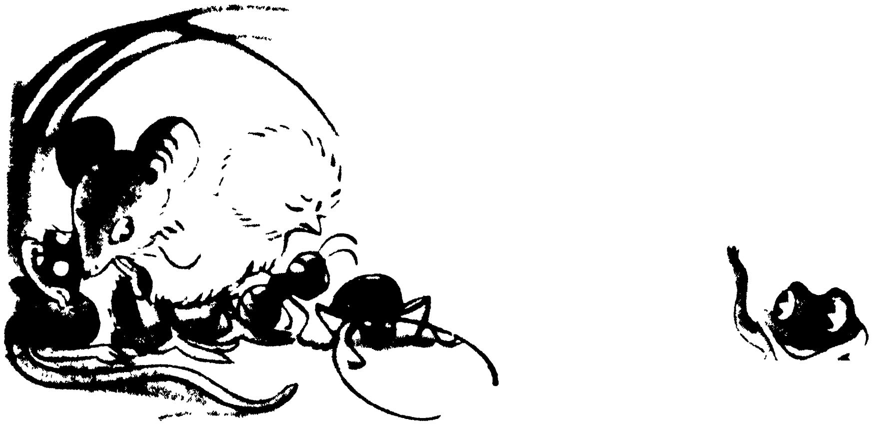

"ट्र्र ट्र्र ट्र्र।" मेंढ़क हँसने लगा। "फिर तुम्हारा यहाँ क्या काम?" और वह हँसता गया, हँसता गया जब तक कि उसकी साँस फूलने नहीं लगी।

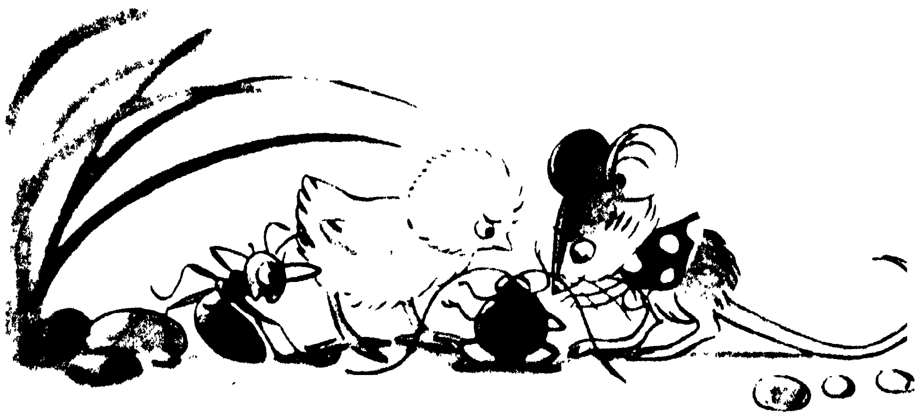

चूज़े, चूहे, चींटी और गुबरैले को बहुत बुरा लगा। उन्होंने कोई उपाय सोचना शुरू किया। वे सोचते गए, सोचते गए, सोचते गए। और फिर उन्होंने यह तरकीब निकाली।

चूज़ा गया और जल्दी ही एक पत्ता लेकर वापस लौटा।

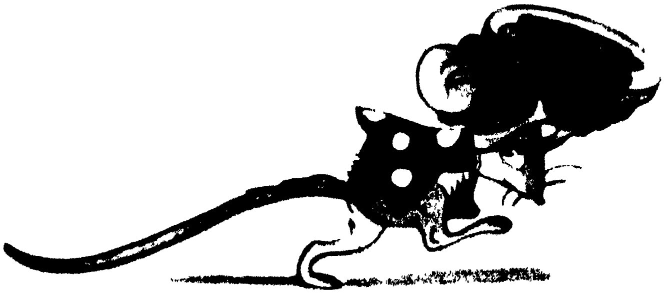

चूहा एक अखरोट का छिलका ले आया।

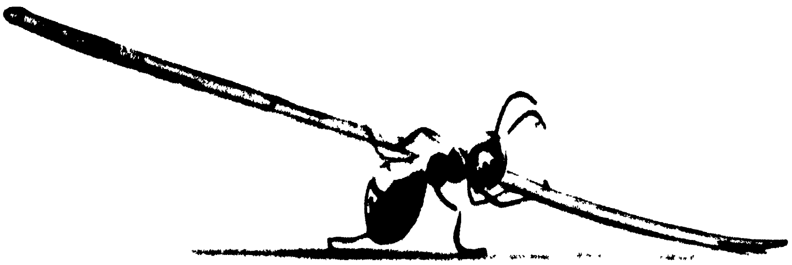

चींटी एक सरकण्डा ले आई।

और गुबरैला काले धागे का एक लम्बा टुकड़ा ले आया।

फिर वे सब काम पर जुट गए। उन्होंने सरकण्डे को अखरोट के छिलके के अन्दर फँसा दिया, और पत्ती को धागे से उसमें बाँध दिया, और एक मिनट में ही सबसे सुन्दर नाव तैयार हो गई।

उन्होंने उसे पानी में धकाया और उस पर चढ़ गए और चल पड़ी उनकी नाव।

मेंढक ने अपना सिर पानी में से बाहर निकाला, और वह फिर से हँसने ही वाला था, पर नाव तो बहुत-बहुत दूर निकल गई थी। इतनी दूर कि वह अब उस तक पहुँच ही नहीं सकता था।

चित्र एवँ कहानी वी. सुटेयेव।
'स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स' से साभार।

कार्ड रखने का रैक

दीपावली, ईद, क्रिसमस और नए साल पर तुम अपने दोस्तों को बधाई कार्ड भेजते हो। तुम्हारे दोस्त भी तुम्हें कार्ड भेजते हैं। हम ऐसे पत्रों और कार्डों को कुछ दिन तक तो ज़रूर सम्हालकर रखते हैं। तुम भी सम्हालकर रखते होगे। इन्हें रखने के लिए कई तरीके काम में लाए जा सकते हैं जैसे थैली में भरकर रखें या किसी फाइल में रखें आदि। वैसे बाज़ार में कपड़े या प्लास्टिक के बने रैक भी मिलते हैं। लेकिन, मोटी कार्डशीट से इसे तुम घर पर ही बना सकते हो। इस बार कार्डों को सम्हालने के लिए यह रैक बना ही डालो।

सामग्री : स्केल, पेंसिल, गोंद, कैंची और मोटी कार्डशीट। पुराने कार्ड या पोस्टकार्ड भी इस्तेमाल कर सकते हो। प्रयोग के तौर पर पहले इसे पुराने पोस्टकार्ड से बनाओ फिर अपने मन मुताबिक बड़ा बनाने के लिए बड़ी कार्डशीट लेकर बनाना।

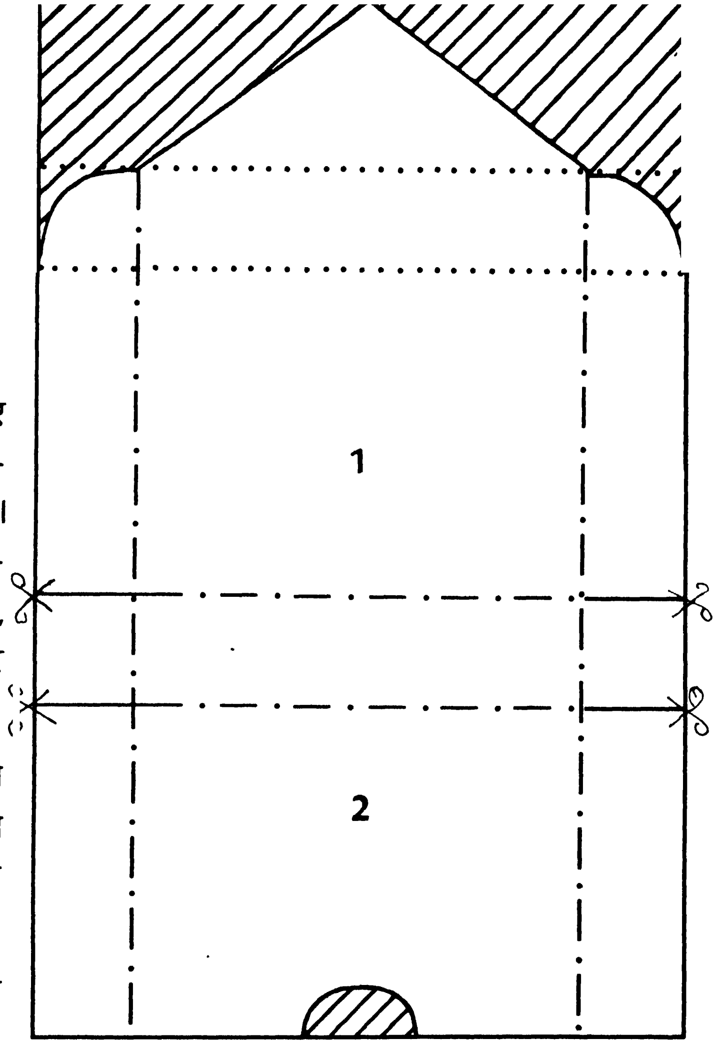

पुराना पोस्टकार्ड ले लो। चित्र में दिखाए अनुसार निशान बना लो। नाप के लिए दाएँ-बाएँ एक-एक सेंटीमीटर जगह छोड़ना है। इसी तरह आड़ी रेखाओं के बीच में भी एक-एक सेंटीमीटर की जगह छोड़ो। और हाँ, निशान बनाते वक्त ख़्याल रखना कि 1 और 2 नम्बर के हिस्से बराबर हों।

चित्र में जहाँ तिरछी रेखाएँ दिखाई दे रही हैं उन हिस्सों को तो काटकर अलग कर देना है। (—•—•—•—) रेखा-बिन्दु वाली रेखाओं पर से मोड़ के निशान बना लो।

चित्र में बीच वाले हिस्से में जो आड़ी सीधी रेखाएँ हैं उन पर से कट लगा लो।

बस तैयारी पूरी हो गई। अब मोड़ के निशानों पर से मोड़ लो। आकृति के दाएँ-बाएँ की पट्टियों को एक के ऊपर एक रखकर चिपका दो। कट लगे हुए हिस्सों को भी चिपका देना। ऊपर की ओर बीचोंबीच एक छेद करके किसी कील पर लटका सकते हो।

अब तुम्हें अगर बड़ी-सी कार्डशीट में से अपने रैक के लिए एक टुकड़ा काटना हो तो उसके लिए बस इतना समझ लो कि जितनी भी चौड़ाई का टुकड़ा काटो, लम्बाई उससे लगभग तीन गुनी रखना। बाकी काम इसी तरह से होगा।

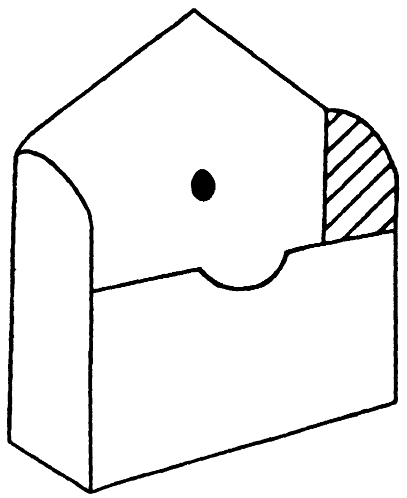

माथापच्ची : हल अक्टूबर, 98 अंक के

1) सबसे नीचे का पत्ता ईंट का इक्का है। उसके ऊपर चिड़ी का बादशाह रखा है। उसके ऊपर काले पान की बेगम और सबसे ऊपर लाल पान का गुलाम रखे हैं।
यह एक हल है। इस तरह का कम से कम एक और हल सम्भव है। उसे तुम ढूँढो।

2) दोनों ही आकृतियों में मकड़ी का इस प्रकार चलना सम्भव नहीं।

3) 8 तीन तरफ रंग वाले गुटके, 12 दो तरफ रंग वाले और 6 एक तरफ रंग वाले गुटके निकलेंगे।

4) 12

5) सभी चेहरे पूरे- पूरे दिखते हैं।

6)
```
   100
 + 330
 + 505
 + 077
 + 099
  1111
```

7) इतवार को कोई चिट्ठी नहीं आती।

8) इस तरह आठ टुकड़े किए।

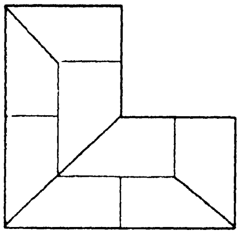

वर्ग पहेली - 86 का हल

म	ली	हा	बा	द		आ	द	र्श
हा		ब	ह		वि	ज	य	
पु	च	का	र		भा		नी	र
रु	ख			ता	ज		य	
ष		क	श	म	क	श		अ
	च		रा	स			धा	न
को	प		बो		अ	ल	गा	व
	ल	ह	र		ला	ल		र
बे	ता	ल		प	व	न	सु	त

वर्ग पहेली - 86 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं - नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल व हबीब अनवर राही, जावद, नीमच। दोनों म.प्र.। अनुभव सिंघल, गजरौला। उ.प्र.। इन्हें चकमक का नवम्बर 1998 अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

हमारे शिक्षक

पिछले शिक्षक दिवस पर शिक्षकों के बारे में तुम्हारे जैसे साथियों से बात करते-करते यह सूझा कि क्यों न हम भी अपने स्कूल जीवन की याद करें, और तुम्हें भी बताएँ अपने शिक्षकों के बारे में। यही सोचकर हमने यह श्रृंखला शुरू की है।

अभी तक इस श्रृंखला में तुमने चकमक टीम के सदस्य टुलटुल विश्वास, कविता सुरेश, राजेश उत्साही तथा एकलव्य में प्रकाशन के काम से जुड़े लालबहादुर ओझा की यादें पढ़ीं। इस बार चकमक टीम के मनोज निगम और स्रोत टीम की छाया दुबे अपने शिक्षकों के बारे में बता रहे हैं। स्रोत भी एकलव्य का एक नियमित प्रकाशन है।

हो सकता है, इसे पढ़कर तुम्हें या तुम्हारे घर में किसी को अपने शिक्षक याद आ जाएँ। अगर वह यादें चकमक के और पाठकों के साथ बाँटने लायक लगें तो उन्हें ज़रूर लिख भेजो - इस स्तम्भ के लिए।

मेरे शिक्षक

बहुत दिनों से मुझे सम्पादन मंडल के लोग कह रहे थे - अपने शिक्षकों के बारे में लिखना। टल रहा था। सितम्बर का अंक पोस्ट करने जाते समय जैसे ही ट्रक में बैठा तो अचानक याद आया। याद करने लगा कि कैसे थे मेरे टीचर।

पहली बार जब स्कूल गया तो वहाँ की टीचर बहुत अच्छी थीं। पढ़ाती भी थीं और लंच में अच्छी-अच्छी चीज़ें खिलाती भी थीं। लेकिन एक दिन स्कूल गया तो वहाँ मालूम पड़ा, बहुत से बच्चों को स्कूल से ड्रेस मिली थी। मुझे नहीं मिली तो मैं रोने लगा। और बहुत रोया। टीचर पर बहुत गुस्सा आया कि सब चीज़ें दूसरे बच्चों को दे देती हैं हमें नहीं। बाद में मालूम हुआ कि यह ड्रेस केवल अनुसूचित जाति व जनजाति के बच्चों के लिए थीं।

कक्षा तीसरी में भोपाल से सागर पढ़ने गया। वहाँ के स्कूल में पहली बार गया तो सबसे पीछे बैठने को मिला। मास्टरजी सुलेख लिखवा रहे थे। मैं भी लिखने बैठ गया। पचास-साठ बच्चों की कक्षा में सबसे पीछे बैठना और सुलेख लिखना - जो सुनाई पड़ा वही लिखा। कई दिनों तक यही क्रम चलता रहा। एक हफ्ते बाद मेरे भैया को स्कूल बुलाया गया और उन्हें मास्टरजी ने बताया कि बाकी सब तो ठीक है, पर सुलेख में हर वाक्य के बाद ये "उद्रम" लिखता है। इसका मतलब हमें समझ नहीं आया। भैया ने मुझसे पूछा। मैंने कहा, "जो सर बोलते हैं, मैं वही लिखता हूँ।" खोजने पर मालूम पड़ा कि सर हर लाइन के बाद 'पूर्णविराम' बोलते थे। पीछे बैठे होने के कारण जो सुनाई पड़ता, वही लिखता था। उसके बाद सर ने पूर्णविराम को अच्छी तरह समझाया और क्लास में सबसे आगे बिठाया।

अभी तक तो सभी अच्छे टीचर मिले थे। सातवीं में भोपाल वापस आना पड़ा। यहाँ साथ के बच्चों ने बताया कि त्रिपाठी सर बहुत ख़तरनाक हैं, उनसे बचकर ही रहना। वो अंग्रेज़ी पढ़ाते थे। उनकी क्लास में अक़्सर मैं काम पूरा करके लाता था। लेकिन अंग्रेज़ी समझ में नहीं आती थी। एक बार मैं उनके हत्थे चढ़ गया। होमवर्क करके नहीं ले गया। साथ में तीन लड़के और थे। सर हम चारों को प्रिंसिपल के कमरे में ले गए। वहाँ पर प्रिंसिपल नहीं थे। चारों को खड़ा रहने का बोलकर वो थोड़ी देर में वापस आए तो उनके हाथ में था काला मोटा रूल। हाथ सामने करने को कहा। हम बहुत डर गए और थोड़ी देर बाद सटा-सट-सटा-सट। रोना आ गया।

आँखें तो बन्द थीं। इतने में काँच टूटने की आवाज़ आई। देखा तो समझ में आया कि गुस्से में उन्होंने हाथ ज़्यादा ऊपर उठा लिया था और ऊपर लगी ट्यूबलाइट फूट गई थी। हम सभी के ऊपर उसके टुकड़े बिखर गए। उसके बाद मालूम नहीं क्या हुआ। उस दिन हम लोग मार से बच गए। और त्रिपाठी जी ने हमें फिर कभी नहीं मारा।

एक थे सोनी सर। संस्कृत पढ़ाते थे। याद करके नहीं लाने पर बच्चों को ऐसी सज़ाएँ देते थे जो अभी तक सुनी भी नहीं थी। जैसे उंगलियों में पेन फँसाकर पहले धीरे-धीरे, फिर ज़ोर से दबाना, लड़कियों के बाल खींचकर झिंझोड़ना, दूसरे बच्चों से चाँटे खिलाना। उनसे बहुत डर लगता था। उनके डर के मारे संस्कृत के बहुत-से श्लोक याद हो गए थे।

अब तक तो टीचर से प्यार और मार का ही वास्ता पड़ा था, पढ़ाई के अलावा। एक और थे शरीफ़ साहब। नाम था शरीफ़ पर . . . क्लास में बच्चों से बात करते समय भी गालियाँ देते थे। यह नौवीं क्लास की बात थी। नौवीं कक्षा में मैंने लड़कों को चुपके से सिगरेट पीते, क्लास छोड़कर फ़िल्म देखते, बाहर घूमते देखा था। यही सब शरीफ़ साहब ने भी कई बार देखा था। उन बच्चों को बहुत मारा, कभी डाँटा, कभी प्यार से समझाया। कई बार बोलते थे - "क्यों माँ-बाप का पैसा बर्बाद करते हो। किस तरह तुम्हारे माँ-बाप

पैसा इकट्ठा करके तुम्हें पढ़ाते-लिखाते हैं। और तुम लोग इस तरह . . . . अरे पढ़-लिखकर अच्छे इन्सान बनो और माँ-बाप का नाम रोशन करो।"

मालूम नहीं दूसरे बच्चों पर शरीफ़ साहब की बातों का कितना असर हुआ। मेरे दिलोदिमाग़ में उनकी एक-एक बात घर कर गई। आज भी याद आता है उनका चेहरा, उनकी दाढ़ी, पान चबाता उनका मुँह, उनके मुँह से निकली गालियाँ और अच्छी-अच्छी बातें। आँखें नम हो जाती हैं। इनके अलावा भी बहुत-से अच्छे टीचर मिले जिन्होंने शिक्षा दी उन चीज़ों की जो हमारे कोर्स में नहीं थीं। शिक्षा दी समाज में रहने के तौर-तरीकों की, इन्सान बनने की।

बाद में भी पढ़ाई की। बहुत से टीचर मिले। बहुत सी चीजें सिखाईं। कुछ ने ट्यूशन की दुकान चलाई, कुछ ने नकल कराई, कुछ ने सिर्फ़ टाइम पास किया। इसके अलावा भी बहुत से लोग मिले जिनसे कुछ-न-कुछ सीखने को मिला। मैंने उन्हें गुरु माना। कुछ ने प्रोत्साहन दिया, दिशा दी। कुछ खुद ही दिशाहीन हो गए . . .

इतने में ज़ोर से हॉर्न बजा। पोस्टऑफ़िस आ गया था। पन्द्रह-बीस मिनट कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। काश पोस्टऑफ़िस न आता। फ़िल्म की तरह सभी घटनाएँ आँखों के सामने घूम रही थीं। सोचा यहीं आँख बन्द करके उन्हें याद करता ही रहूँ। पर चकमक पोस्ट भी तो करना था "उद्धरम"

▸ मनोज निगम

अच्छी दीदी

मुझे अपने शिक्षकों के बारे में खट्टे-मीठे हर तरह के अनुभव याद हैं। जब मैं पहली-दूसरी कक्षा में थी तब हमारी सभी शिक्षिकाएँ बहुत ही नम्र स्वभाव की थीं। गणित वाली दीदी ज़रूर थोड़ी कड़े मिज़ाज की थीं पर उनकी दी जाने वाली सजा बहुत ख़तरनाक नहीं थी। वे अक़सर हमें बेन्च पर खड़ा कर देती थीं। ज़्यादा गुस्सा होतीं तब बेन्च पर खड़े होने के साथ-साथ दोनों हाथ भी ऊपर उठवा देती थीं। हाँ, हमारे साथ पढ़ने वाले लड़कों की ज़रूर कभी-कभी पिटाई हो जाती थी। तीसरी चौथी में भी स्कूल तो वही था, पर पढ़ाने वाली कुछ दीदियाँ बदल गई थीं। उनमें

से एक दीदी मुझे अच्छी तरह याद हैं, क्योंकि उनका सज़ा देने का तरीका सबसे अलग था। परन्तु उनकी वह सज़ा हमारे लिए उस समय सबसे ख़तरनाक सज़ा थी। अब तो उसके बारे में सोचकर भी हँसी आती है।

हमारी कक्षा में बैठक व्यवस्था कुछ इस तरह की थी कि पूरी कक्षा में टेबिल की दो कतारें थीं। एक कतार लड़कियों की थी, दूसरी लड़कों की। प्रत्येक टेबिल पर तीन बच्चे बैठते थे। जब भी हममें से कोई होमवर्क करके न लाए तो उसे लड़कों की कतार में लड़कों के बीच बिठा दिया जाता था। ऐसा ही लड़कों के साथ भी होता था। तब हमें यह सज़ा बेहद ख़तरनाक व शर्मनाक लगती थी। क्योंकि सज़ा पाने वाला तो, दीदी की आज्ञा को सुनकर चुपचाप जाकर वहाँ बैठ जाता, जहाँ उसे बैठने के लिए कहा जाता। पर इस दौरान कक्षा के बाकी बच्चों के मुँह पर हाथ रखकर दबी-दबी आवाज़ में ऑ S SS, ऊ SSS की आवाज़ें आती रहतीं। एक मज़ेदार बात ये थी कि सज़ा पाने वाले को जहाँ बिठाया जाता उसके आसपास बैठे बच्चों की जबरन में सज़ा हो जाती, क्योंकि पीरियड ख़त्म हो जाने के बाद बच्चे उन्हें भी चिढ़ाते थे।

चौथी कक्षा की एक बात मुझे अच्छी तरह याद है। जब मेरे गले में टॉन्सिल का ऑपरेशन हुआ तो बेहोश करने की दवाई आँखों में चली गई थी। इस वजह से ऑपरेशन के बाद भी मैं 10-12 दिन तक स्कूल नहीं जा पाई थी, क्योंकि तब आँख खोलने में भी तकलीफ़ होती थी। लगता था जैसे आँखों में काँटा चुभ रहा हो। जब आँखें ठीक हुई और उसके बाद पहली बार स्कूल गई, गणित वाली दीदी होमवर्क(गृहकार्य) चेक कर रही थीं। मुझे उनसे बहुत डर लगता था। मेरी कॉपी में तो 10-15 दिन का काम बाकी था, मैं अपनी बारी के बारे में सोच-सोचकर घबरा रही थी। जो भी होमवर्क करके नहीं लाया था, उन्हें दीदी बहुत बुरी तरह पीट रही थीं। मुझसे पहले जिसका नम्बर था वहाँ तक दीदी पहुँचीं तो मेरी तो जान ही निकल गई। दिल तेज़ी

से धक-धक कर रहा था, मुझे लगा आज तो ख़ैर नहीं। जैसे ही दीदी मेरे पास आईं बोलीं, 'छाया कॉपी कहाँ है? और इतने दिनों से स्कूल क्यों नहीं आ रही थी?'

'दीदी हमारा ऑपरेशन हुआ था।' बस इतना कहते-कहते मुझे ज़ोर-से रोना आ गया। तब दीदी ने मुझे पकड़ा और हँसकर कहा, 'पगली तो इसमें रोने की क्या बात है, किसी से कॉपी लेकर अधूरा काम पूरा कर लेना और सुन, यदि समझ में न आ रहा हो तो बीच की छुट्टी में आकर पूछ लेना और हाँ रोना नहीं।' इतना कहकर दीदी चली गईं। उसके बाद से वो दीदी मुझे बहुत अच्छी लगने लगीं।

● छाया दुबे

सभी फोटो म. प्र. माध्यम के सौजन्य से।

माथापच्ची

(1)

एक घर में सात बिल्लियाँ हैं। हरेक बिल्ली ने सात-सात चूहे मारे। अगर वे उन्हें नहीं मारतीं तो हरेक चूहा साल भर में सात-सात किलो अनाज चट कर जाता। तो बताओ बिल्लियों ने कुल कितना अनाज बचा लिया?

(2)

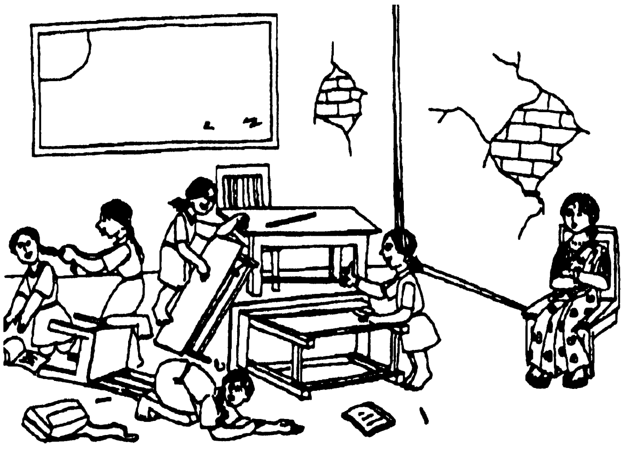

(3)

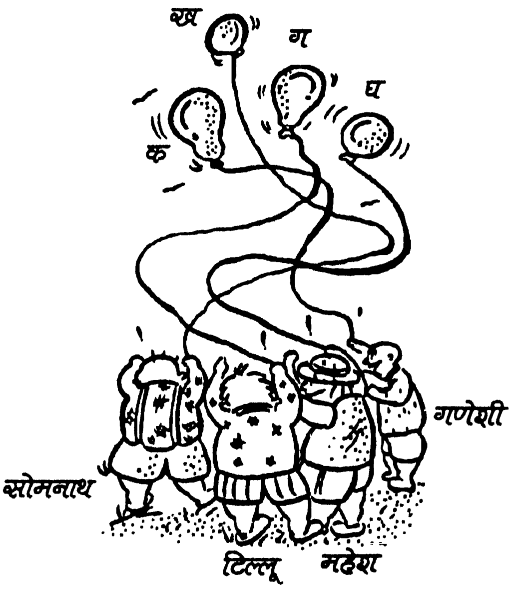

यहाँ चार बच्चों के फुग्गे आपस में उलझ गए हैं। फुग्गों को 'क', 'ख', 'ग', 'घ' नाम दिए हैं और बच्चों के नाम हैं सोमनाथ, टिल्लू, महेश और गणेशी। क्या तुम बता सकते हो कौन-सा गुब्बारा किसका है?

तुमने यह चित्र सितम्बर की चकमक में देखा होगा। यहाँ उसकी दो प्रतियाँ बनाते-बनाते दोनों में कुछ अन्तर छूट गए। किसी में कुछ ज़्यादा है तो किसी में कुछ कम। क्या तुम इन दोनों में 6 ऐसे अन्तर ढूँढ सकते हो?

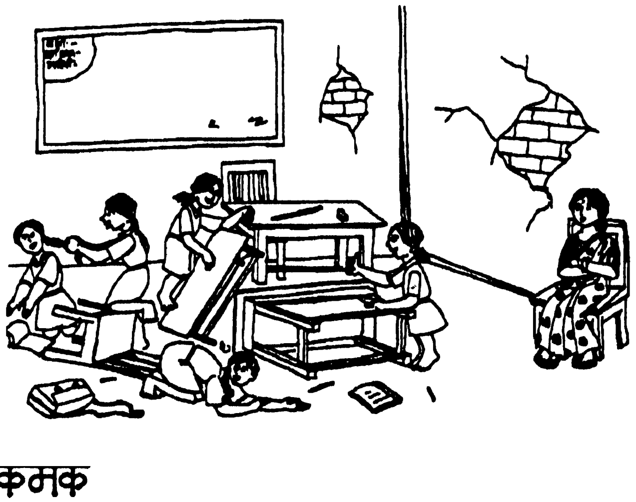

(4)

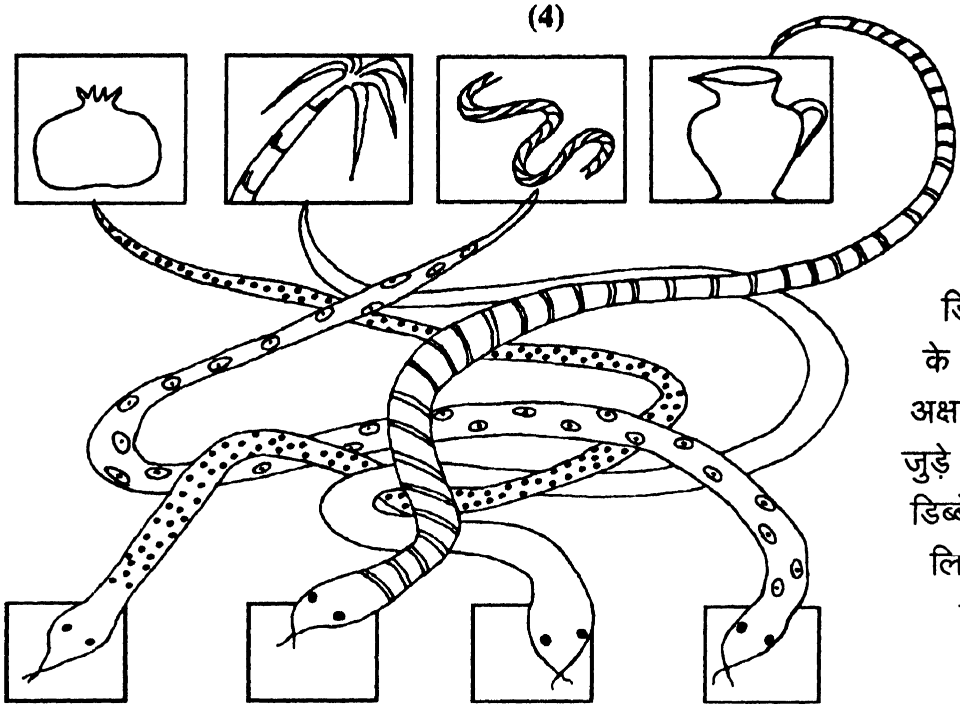

यहाँ ऊपर के डिब्बों में बनी चीज़ों के नाम का पहला अक्षर उसके साँप से जुड़े नीचे के ख़ाली डिब्बे में लिखना है। लिखकर दखो क्या इन साँपों को कोई नाम दे पाते हो?

(5)

एक दुकान से मैंने एक ऐसी चीज़ ली जो बड़ी कमाल की है। वह दुनिया की हरेक भाषा लिख सकती है। साथ ही जोड़–घटा, गुणा–भाग आदि भी कर सकती है। यूँ कह सकते हैं कि वह एक छोटा–मोटा कम्प्यूटर ही है। और अगर काम करते हुए कोई ग़लती हो जाए तो एक और छोटे–से यंत्र की मदद से उसे ठीक भी किया जा सकता है।

जानते हो यह मज़ेदार चीज़ मुझे कितने में मिली? सिर्फ़ एक रुपए में। तुम सोच रहे होगे कि यह कैसी चीज़ है जो इतने काम भी करती है और इतने सस्ते में मिलती भी है। सोचो, सोचो। पता लगाओ। हो सकता है, यह तुम्हारे पास भी हो।

(6)

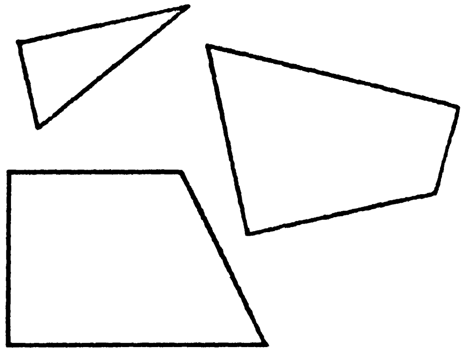

क्या इन तीन आकृतियों को जोड़कर तुम एक वर्ग की आकृति बना सकते हो? अगर ऐसे ही हल नहीं सूझता हो तो बिल्कुल इसी आकार में गत्ते के तीन टुकड़े काट लो और फिर उन्हें जमाकर वर्ग बनाने की कोशिश करो।

(7)

जल्दी से बताओ कि नीचे के दो सवालों में से किसका जवाब बड़ा होगा?

(क) 1 से 5 तक की सब संख्याओं का गुणा करना।

(ख) 1 से 10 तक की सम संख्याओं का गुणा करना।

जान बची, लाखों पाए

● अजय विश्व, पाँचवीं, पीपरा, सागर, म.प्र.

एक दिन मैं अपनी नानी के घर जा रहा था। तभी मुझे भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने पीछे मुड़कर देखा एक कुत्ता मेरी तरफ दौड़ता और भौंकता हुआ आ रहा था। मैं डर गया। अपनी पूरी ताकत से दौड़ने लगा। मगर वह कुत्ता मुझसे अधिक तेज़ दौड़ रहा था। देखते-देखते वह मेरे पास आ गया। कोई उपाय न देखकर मैं एक पेड़ पर चढ़ गया। वह कुत्ता पेड़ के नीचे खड़े होकर गुर्राने लगा। इन्तज़ार करते-करते आधा घण्टा हो गया मगर वह कुत्ता था कि जा ही नहीं रहा था। मैंने पेड़ से एक डाली तोड़कर उसे मारना चाहा मगर अफ़सोस निशाना चूक गया। मैंने सोचा कि अब तो मारे गए। वह कुत्ता और ज़ोर-ज़ोर से गुर्राने लगा। मैंने एक और डाली निशाना साधकर मारी। इस बार वह कुत्ते की पीठ पर लगी। वह भाग गया। मैं जल्दी से पेड़ से उतरा और नानी के घर चला गया।

● गीत नौटियाल, पाँचवीं, राँची, बिहार

पढ़ाई

__पढ़ाई__ मेरे लिए एक बहुत बड़ी परेशानी है। ख़ास करके इतिहास। उसमें हम पुराने राजा और रानी के बारे में पढ़ते हैं। जब मैं भूगोल के बारे में पढ़ता हूँ तो मेरा सिर चकराता है, ख़ास करके जब मैं अफ़्रिका के बारे में पढ़ता हूँ। जब मैं गणित पढ़कर पाठशाला से बाहर आता हूँ तो, मुझे चारों तरफ तारे ही तारे दिखाई देते हैं। मैं पढ़ाई से आज़ाद होना चाहता हूँ। जी खोल के जीना चाहता हूँ।

● मेहुल पटोदिया, सातवीं, बीबी (चास), पुणे, महाराष्ट्र

मेरा पन्ना

दीप्ती चौधरी, आठवीं, छतरगढ़, बीकानेर, राजस्थान

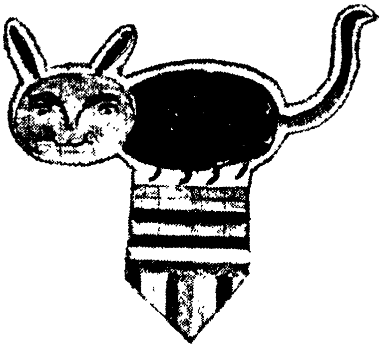

वीरेन्द्र सिंह, तीसरी, गौतमपुरा, इन्दौर, म. प्र.

श्रीजा, छह वर्ष, भोपाल, म. प्र.

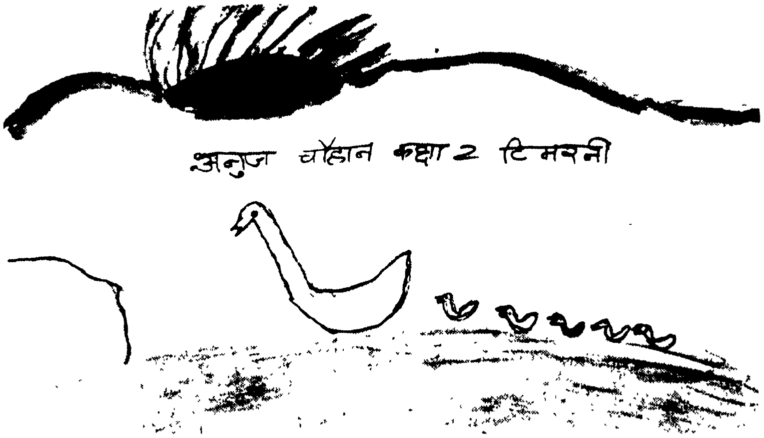

अनुज चौहान, दूसरी, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.

ज्योति केन, आठवीं, गौतमपुरा, इन्दौर, म. प्र.

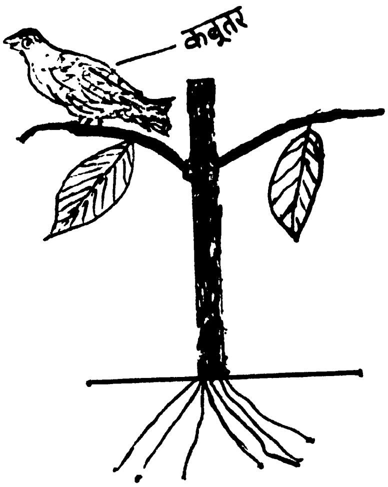

शशिकान्त गुप्ता, पाँचवीं, पटेहरा, रीवा, म. प्र.

मेरा पन्ना

रेल दुर्घटना

हमारे गाँव से सोलह किलोमीटर दूर स्थित चांपा में हसदेव पुल के पास दिनाँक 14. 9. 97 दिन रविवार को शाम 5.45 बजे हुई दुर्घटना का यह एक दुखद दृश्य है।

अहमदाबाद एक्सप्रेस दुर्घटना ग्रस्त हो गई। जिसमें सैंकड़ों आदमी मौत के घाट उतर गए। इस दुर्घटना में छह डिब्बे नदी में गिर गए। उसमें से एक डिब्बा बीच में ही लटक रहा था। इंजन आगे एक खम्भे के सहारे रुक गया था।

लेख एवं चित्र : आशुतोष दुबे, दूसरी, बम्हनीडीह, दुर्ग, म. प्र.

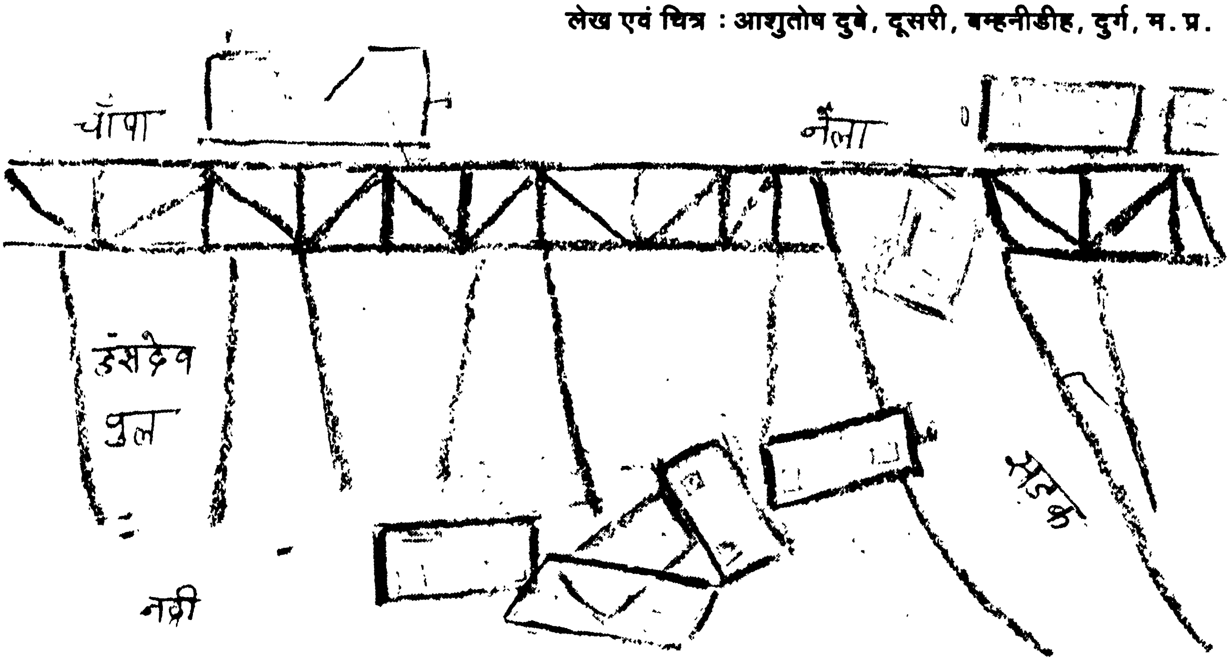

चांपा

चल पड़ी दुर्ग से ट्रेन चांपा को
चल पड़ी हृदय में हर्षाति वह इठलाती
चल पड़ी सीटियाँ बजा बजाकर मस्ती से
चल पड़ी सभी लोगों का मन ललचाती
जा रही ट्रेन भागती हांफती तीव्र गति से
वह पार कर रही थी नगरों और गाँवों को
वह पार कर रही थी खेतों और खलिहानों को
पार करती वीराने मैदानों को
दम लेकर थोड़ी रुकती, फिर चलती अपनी मंज़िल
जब उसे देखते बच्चे तो चिल्लाते टाटा टाटा

भागते भागते पहुँची बिलासपुर
जहाँ यात्री कर रहे थे ट्रेन का इंतज़ार
फिर सीटी की आवाज़ लगाई

नदी को पार करती पलक झपकते
अब आई हसदेव नदी
जिस पर हुई थी दुर्घटना
फिर आया चांपा जहाँ रहती है
मेरी प्यारी दीदी

● शेख साजिद कुरैशी, अर्जुंदा, दुर्ग, म. प्र.

सपना

हरदा से तीस किलोमीटर दूर एक गाँव है, वहाँ मेरे पापा नौकरी करते हैं। एक बार मैं और मेरे पापा उस गाँव से हरदा आ रहे थे तो मैंने आकाश में पानी के घने बादल देखे। मैं घबराया कहीं पानी न आ जाए। दूसरे गाँव के पास पानी आ गया। तो मैं और मेरे पापा एक वृक्ष के नीचे गाड़ी रखकर एक टूटे घर के पास खड़े हो गए। पानी तेज़ होता जा रहा था। इतने में मुझे नींद आ गई। मैं सो गया। तब मैंने देखा कि पानी बढ़ता जा रहा है। बाढ़ आ रही है। सब डूब रहे हैं- मैं भी डूबने लगा। तब मैं ज़ोर-से चिल्लाया। इतने में मेरी नींद खुल गई। सब आश्चर्य से मुझे देखकर हँसने लगे। मैं भी ज़ोर-से हँसने लगा।

● रत्नेश सोरठिया, छठवीं, हरदा, होशंगाबाद, म. प्र.

ममता वासनिक, छायन, बदनावर, धार, म. प्र.

वर्ग पहेली – 89

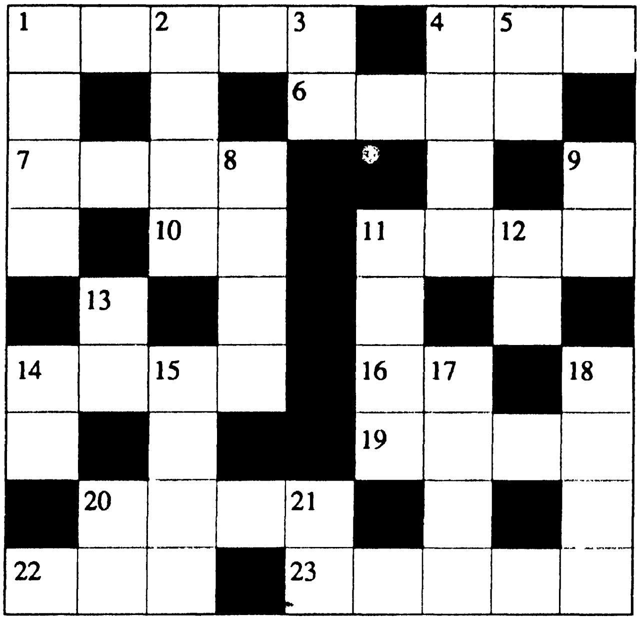

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. आबू में बगला, बहुत ज़्यादा गुस्सा है (2,3)
4. अजनबी शहर में ढूँढो गुलाल का साथी (3)
6. पूँछकटे हनुमान में आधा डर, बने रास्ता दिखाने वाला (4)
7. दरदरा (4)
10. सटीक में है रह-रहकर उठने वाला दर्द या चुभन (2)
11. किसी चीज़ के बारे में अच्छे से पता लगाना (4)
14. नाटक या सिनेमा आदि में भूमिका, रोल (4)
16. सराहने के लिए कहा जाता है यह शब्द (2)
19. सीधी सपाट ज़मीन जिसमें ज़्यादा उतार-चढ़ाव न हो (4)
20. बार रोका के उलटफेर में है व्यापार (4)
22. पानी निकालने या रखने का बर्तन (3)
23. हवालात राज में ढूँढो कीमती पत्थर, हीरे-मोती (5)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. कमाई (4)
2. एक पतली फलीदार सब्ज़ी (4)
3. मुँह का वह रस जो भोजन को नर्म भी बनाता है और पचाने में भी मदद करता है (2)
4. हनुमान के सिर की जगह अन्दाज़ा का सिर (4)
5. एक तरह की जमानत (2)
8. सरदार की उठापटक में रसीला (4)
9. मज़हब भी, दुखी भी (2)
11. जहाँ छात्रों के रहने की व्यवस्था होती है (4)
12. इसे बोने से पौधा उगता है (2)
13. 1, 2, 3, . . .? (2)
14. दुर्ग, शहर नहीं, पुराने ज़माने में शहर या गाँव की सुरक्षा के लिए बनाया जाता था (2)
15. खाने की वे दो चीज़ें जो एक समय में ग़रीबों का भोजन कहलाती थीं (2, 2)
17. एक ही रास्ते पर चलने वाले दो या अधिक लोग (4)
18. मोहब्बत (4)
20. समय का खण्ड (2)
21. अचरज न करो, धूल है (2)

वर्ग पहेली – 89 का हल फ़रवरी, 1999 के अंक में देखें। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें, बल्कि संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का फ़रवरी, 1999 अंक उपहार में भेजा जाएगा।

12528